مجمع الاشعار

સલાસલઅશઆર

حصہ سیوم

યાને

મજમઉલ અશઆર.

ભાગ ત્રીજો. ૩

સરવે શોકીન વાંચનારાઓને સારૂ
ઉરદૂ ઉપરથી સારીરીતે સુધારીને
તેના ત્રણ ભાગ કરીને ગુજરાતી હરફે
લખાવીને શેઠ કરીમજી મૂસાજીએ
પોતાના હૈદરી છાપખાનામાં છાપી
પ્રસિધ્ધ કર્યો.

મુકામ મુંબઈ.

સન ૧૨૯૯ હિજરી.

સંવત ૧૯૩૮ના વિક્રમાજિત.

સને ૧૮૮૨ ઈસ્વી.

આ કિતાબ છાપવા વિશે સરવે હક
માલકે પોતાને સ્વાધીન રાખ્યો છે
માટે અમારી રજા શિવાય કોઈએ
છાપવી નહીં.

१५७

रदीईया·

ग़ज़ले ईदीह·२५३

क्या ख़ते मुबारकमें सफ़ाई है नज़र आई;
नक़्शेमें मोहम्मदके ख़ुदाई है नज़र आई·
अल्लाहकी बयानिजमें सुरैयासे सराहत;
उस ज़र्रःपे कुबराईकी आई है नज़र आई·
जब हाल निकल पस्ल हुवा, तबतो खुली आंख;
उस चश्मके परदेमें, ख़ुदाई है नज़र आई·
आलमको दिया क़ुदरते, आलमने पुकारे;
उस नूरे इलाहीकी, दोहाई है नज़र आई·
कूचेमें सितमगरके, ख़्याल सारे पडे हैं;
उस दहरकी मासूम यकाई है नज़र आई·
उस सरके रवां ख़ासपे नित अब्रे रवां देख;
उम्मीद हो आजपकी, बर आई है नज़र आई·

ऐ जने फ़रीद जाके कमरोह तर्जमेकर ;
वोह जन्नत अदन फिरे हुमाई नज़र आई है·

ग़ज़ले फ़रीद· २८४

जब उसबुते काफ़िरकी, सवारी नज़र आई है;
आशिक़की वहीं अक़्ल, सिधारी नज़र आई है·
रोनेसे मेरा सब्ज़ हुवा, बाग़े ख़यालत ;
चश्मोंकी घटा अब्रे, बहारी नज़र आई है·
आनेसे सनम मजलिसमें, रिंदोंमें हुवा कैई ;
आंखोंमें तेरे मयकी, ख़ुमारी नज़र आई है·
दुन्यासे गया गोरमें, तोभी न पड़ा चैन ;
कुछ तेरे कमी भी, न क़रारी नज़र आई है·
हर सफ़्हए गुलज़ारपे, नज़रेसे सनमके ;
बिल्लाहके ज़ख़्म नक़्शोंने, गारी नज़र आई है·
आशिक़को जिसा क़त्ल किया, ऐक निगहसे ;
क्या ख़ूब तेरी ज़ुल्फ़, गुज़ारी नज़र आई है·
कुछ पार फ़रीद होये, तेरे ज़ुल्मसे ज़ालिम ;
तुझ हिजरकी सीनेमें कटारी नज़र आई है·

ग़ज़ले नियाज़ २८५

दिखलाये दाग़ दिलने, गुलिस्तां नये नये ;
वहशत दिखा रही हय, बयाबां नये नये·

तेरे जुल्फ़ोंसे मुझको ऐसाही ख़याल आयो ;
पैदा हुये हैं अनेक, जाहां नये नये·
दैरो हरम्म कोई नहीं, तेरी राहपर ;
काफ़ीर नये नये हैं, मुसल्मां नये नये·
मैं किस्तरह बचूं, तेरे हाथोंसे तंग हूं ;
लाती कहांसे रोज़ गिरिजां नये नये·
किस्तरह हो गुज़र दे, ख़लांपै ऐ नियाज़ ;
दरखा नये नये हैं, निगाहबां नये नये·

ग़ज़ले आ़क़िल· २५१

तेरी उल्फ़तमें हुये ख़्वार, आहा कितने
तिश्नये खूं हैं मेरे ग़ज़ले मुसल्मां कितने·
एक उम्मीदथी तुमसे, न ख़बर आई मेरी ;
रह गये दिलमें मेरे, हसरतो अरमां कितने·
नहीं मिलता तेरे नाक़ कापता ऐ लैली ;
छानमारे तेरे मजनूने, बयाबां कितने·
कितनोंको ज़ानके लालोंसे, भुलाया तो यही ;
ख़ुले पैयांके पड़े पैयमें, ख़लां कितने·
जिस्ने देखा तेरी तस्वीर, कहा सूरते ज़ेबा ;
पड़ते सवाल हैं आज आई, मुसल्मां कितने·
जे़दीया आयनाये यार, जिसके हैं हैरां कितने ;

फिरते हैं जुल्फे परेशां के, परेशां कितने
पीठके सहरासे चला, शोहरकी बानिस बजमें ;
लिपटे दामनसे मेरे, प्यारे मुग़ीलां कितने.
मुसहफ़ी रूमें खिंची जाती है, उसकी तस्वीर ;
अक मुरव्वांसे खिंचे जाते हैं, मुरव्वां कितने.
कोई समझा न तेरे शेरका रुत्बा आक़िल ;
यूंतो हैं कहनेको दुनियामें, सखुन्दां कितने.

ग़ज़लेयली. २८७

जिसे इश्क़का तीर, कारी लगे ;
उसे ज़िंदगी जगमें, भारी लगे.
न होवे उसे जगमें, हरगिज़ क़रार ;
जिसे यारे जानीसे, यारी लगे.
न छोडे महब्बत, दमे मरग तक ;
जिसे इश्क़की, बेक़रारी लगे.
वली हरदम मुझे, आशिक़े पाकको ;
प्यारे तेरी जात, प्यारी लगे.
अगर तू वलीके, सुख़नको सुने ;
रक़ीबोंके दिलमें, कटारी लगे.

ग़ज़लेयकी. २८८

सोहे जिगरपे नक़्श है, नामे मोहम्मदी ;

रोज़े अज़लसे हमहैं, गुलामे मोहम्मदी·
हरजैल क्युं न कसरे, फ़लकसे बलंदहो ;
मौजूंहै चरखे रफ़अते, नामे मोहम्मदी·
क़ंदते कैसे मुरहली, उठतेथे गोरसे;
सुन्नेको गौरो दिलसे, कलामे मोहम्मदी·
चरखे चाहारुम छिनका, मकां उनका लामकां ;
ऐसासे है बलंद, मकामे मोहम्मदी·
है आरजूए ज़ंदये, आजज़ वहीका यही;
या रब बनादे मुजको, गुलामे मोहम्मदी·

गज़ले लतीफ़· २५५

दाग़ दिलबरांका न जायेगा, कभू दिलसे मेरे ;
येह निशानीतो मिलीहै, मुजे क़ातिलसे मेरे·
चरन्दे उस रूख़ निगाहका, नज़ जांसे हो कभू;
हाल सैय्यादका पूछो, दिले बिस्मिलसे मेरे·
हाल क्या पूछतेहो दिलबरकी बीमारीका ;
बहेर आसारतो है यारो, शमायेलसे मेरे·
राजको ताजवीज़पे उसके, बे किया दस्तदराज़
बोला चल दूरहो, क्याकाम हमायलसे मेरे·
चंद हरचंदके मैं दामने, लैली पकडूं ;
हाथतो दूर हमेशां रहे, महमिलसे मेरे·

क़त्लतो उसने किया मुझको, पतशाहीरनकी;
घलनी झेलाही हुई साहेबे, क़ातिलसे मेरे.
आग लगजाये न दुन्यामें, मुझे डर हय जलतीहू:
आह सोलं जनिकलतेहैं, नेहां दिलसे मेरे.

ग़ज़ल. ३००

घस्कदर हमपे ना, तपानी हय;
मूझे सरतकली, सरगिरानी हय.
मेरे ज़ख्मोंपे मतरखो मरहम
मेरे क़ातिलकी येह निशानी हय.
तनके छिदछिदके होगये ग़िरबाल;
हमने सहराकी ख़ाक छानी हय.
हाले दिल पूछलो तबीबोंसे;
क्यूं मेरा रंग ज़ाफ़रानी हय.
याक़िये ज़ख्मेदिल हरे होजाये;
पेहनी पोशाक उसने धानी हय.

ग़ज़ले शाही. ३०१

कहो उस जरक परीसे, आन ज़ालिम साथि जनाहयू;
जनाज़ेपर हमारे आजरहमत, शामियाना हय.
चलूंगा सरके बलरौंके, शहादत दस्तगीरीमें;
जहां तलवार चलती हय, उसी कूचेमें जाना हय.

लिया जिस्ने हमारा नाम, मारा बे गुनह उस्को ;
निशां जिस्ने बताया है, वोह तीरोंका निशाना हय.
नजर मा आओ तो प्यारे छोड दूं, मिजगांके चिल्वनको ;
तुम्हारे ऐन वाअदेपर, हमें आंखें बिछाना हय.
गिरेबां फाडके दस्ते जुनूंसे, कब कुछे फुरसत ;
अलीतो दामने सहराके भी, पुरजे उडाना हय.
जो बाल उस्के उलझते हैं तो, दिल मेरा उलझता हय ;
यहां है दरदशानेमें, वहां जुल्फोंमें शाना हय.
मिसाले नकशेपा साबीं, पडे रहते हैं सरयेकब ;
मगर कातिल तेरा गंजे शहीदे आस्ताना हय.

गजले जफ्शिरा-३०२

तासीर तेरे इश्कने, मुझपर करीन की ;
मैं क्या करूं नसीबने, कुछ यावरी न की.
दिलबर समझके दिलको दिया, उस्के हाथमें ;
दिल लेगया मेरा, मेरी कुछ दिलबरी न की
मैं रश्कके मुश्तरी तेरी खूबीके सामने ;
मुश्तरीने भी बरीसी, कुछ हमसरी न की.
जबदीकुश्ताके पोंहचे सिकंदर लबे हयात ;
मैं खिजर यहां तलक, भला क्युं रहबरी न की.
जफ्शिराके पास गोहर, दिलथा विसालमें ;

ज़ीमत कुछ उसकी तू जो तो, ऐ जौहरी न की·

ग़ज़ले तमन्ना ३०४

ख़याल आता है यह सेहन गुलशन की, जिधाउं मैं सिफ़र करके जीये;
पसोई यह हयू गुले रंगे, गुलज़ार गोज़ार उसकपर करके जीये·
यही है तसद्दीन यकुल आख़िर पे, तेरे जी मारो ना लयां के;
के संग तेरे है आस्तां ख़ाजा की जालीन सर करके जीये·
चमक रहा था ज़नजपे उसके, अरक़ कुतरा यो धिस्त रहसे;
सितारा जैसे हो जगमगाता, ईसके ऊपर क़मर करके जीये·
चमन पे तायर यह ज़री, मस्तीसे यह चहाते हैं हमगुलशन;
जो पेरे गुलज़ूझ हम सेथंता, रखें मिन्कार पर करके जीये·
निगाहे पूरे ज़ असी आई तके लगे, जरइ उसे हाथे जालिम;
जो कर के दुश्मन पे ध्यान गुज़रे तो, आके ठहरे क़मर करके जीये·
चढा यो: कोठे पे ज़ब कातिल तो, सब पुकारी यहां कीजिये तू;
के तेरी देहशत से फ़ुरसती निकले, छिपाके मुह को सिपर करके जीये
यही तमन्ना है मुद्दतों से ज़नाजे आरी पे अपनी आसी
के दफ़्न अपना नज़र में होवे, असीके दीयारो दर करके जीये·

ग़ज़ले हनरीश ३०५

आती थी आज दूर, मुझे देख हरगई;
दांतोके बीच हाथ, ज़बां ऊर पलर गई·
आहटको मेरी पाके वोह, चौखट से हर गई·

अरपर वोह़ परदीयाडके, अपइसे चिमट गये·
की छेड़छाड़ मैंने जो माक़ूलसी उसे;
बे ऐख़्तियार शर्मके मारे सिमट गये·
कम बख़्त क्या हुवा जबलन, अंदाज़ येह छुरी ;
हय हय छुरीसे सुबहकी, छाती न इरगये·
ऐ नशाकी गुल्लगृ येह, धुवांधार है ग़ज़ब;
आकर बहार जिसके, गलेसे लिपट गये·

ग़ज़ले सौदा ३०६

गर तुझमें है वफ़ा तो, जफ़ाकार कौन हय;
दिलदार तू हुवा तो, दिल आज़ार कौन हय·
नालां हूं मुद्दतोंसे, तेरे सायेके तले;
पूछा न येह कभू पसे, दीवार कौन हय·
हरशब शराब ख़्वारी, हर एक दिन सियाहमस्त;
आशुफ़्ता तुझसी सरपरी, दस्तार कौन हय·
सौदाको तुझमें इश्क़से करते हैं आज क़त्ल;
पहचानता हय तू येह गुनहगार कौन हय·

ग़ज़ले सौदा ३०७

सावनके बादलोंकी तरहसे भरे हुवे;
येह वोह नयन हैं जिनसे, के जंगल हरे हुवे·
अय दिल येह किससे बिगड़ीके, आती है फ़ौजे अश्क;

लख़्ते जिगरकी नाज़ुकीको, आगे धरे हुये.
पलकें तेरी कहां न सईआरा हुयेके यहां ;
अईयाने कोहरहके, नजरहम परे हुये.
आंखोंको तेरी क्युंके, मैं बांधूंके यह गिलास ;
जलते हैं मेरे दिलकी, ख़राअ़त यरे हुये.
जूं दीदकी नमधरोंसे यह, लरते हैं यक दिगर ;
लडके मुझ आंसुओंके, जिपर मजगरे हुये.
घिनसाई अपना सोच्ये, किसको बजुज़ खुदा ;
मुनसिफ़ ईजे बोलते हैं, सो तुझसे डरे हुये.
नज़दीक अपने रेहनेसे, मतकर हमें तु मन्अ ;
हैं लाख कोस जब, तेरे दिलसे परे हुये.
मजलीसमें छोकरोंकी, जे हुजरेसे शैखजी
आखेतो फिर खुदाने कहा, मसखरे हुये.
सोदा निकलन घरसेके अब तुझको ढूंढते ;
लडके खडे हैं पथरोंसे, दामनभरे हुये.

गज़लेआसिफ़ ३०८

यह अश्क चश्मोंमे अब, जमरहे रहे न रहे ;
हु: ख्वाब जहरमें कोठे, दमरहे रहे न रहे.
तु अपनी शोखीये, जैरो जफ़ासे मत गुज़रे ;
तेरी बलासे मेरा दम, रहे रहे न रहे.

क़मर को होताहै हरमाहमें कमालो ज़वाल;
तेरे भी हुस्नका आलम, रहे रहे न रहे.
ग़रूर है मुंहपे तेरे, ख़ुश्नुमा सनम लेकिन;
हमेशां गुलपे यह शबनम, रहे रहे न रहे.
शिताब आके तेरी दीद, कुक मोयस्सर हो;
यह दम लबोंपे है, अबथम रहे रहे न रहे.
भ वस्लमें हो जुदाई तो, क्याकरे आसिफ़ई;
यह छल्लेका है बाहम, रहे रहे न रहे.

ग़ज़ले आबरू. ३०९

तुम्हारा दिल अगर, हमसे फिरा हय;
तो बेहतर है, हमाराभी ख़ुदा हय.
हमारी कुछ नहीं तक़्सीर लेकिन;
कहो हमने तुम्हारा क्या किया हय.
कुओ हो ग़ैरक़दर, बेबर हमसे;
सभी तुमको कहेंगे, बेवफ़ा हय.
वोह अहमक़ है, कहाहै जिसने तुमसे;
मिलो जिस्से तुम्हारा, दिल मिला हय.
अ़बस बेदिल करो मत, आबरूको;
मुसाफ़िर है शिकस्ता हय गदा हय.

ग़ज़ले आशिक़ाना ३१०

सांझ आकर हिजरमें खडती हय ;
रोज़ जब तेरी, याद पडती हय.
यहां हम मारे गये, क्युंके बला ;
क्या बुरी तरह आंख लडती हय.
पेचमें लाके हम गरीबोंको ;
जुल्फ़ किस किस तरह अकडती हय.
तुमको जानेदूं क्युंके ख़ाना ख़राब ;
दिलकी बस्ती मेरी उजडती हय.

ग़ज़ले हिज्जर-३११

मरताहूं तेरे इश्क़में, सरशार ख़जरसे ;
टुक मेरे दिल ज़रकी, ऐ यार ख़जरसे.
ऐ याद तुही जाके ज़रा शूक़से केहना
मरता है कोई जपसे, दीयार ख़जरसे.
अल्लाहही बचाये मुझे आतशे ग़मसे ;
या तुही मेहरबाके, मेरे यार ख़जरसे.
किस तरह सताया है, मेरे दिलको तूने ऐ यार ;
मरताहै तेरा तालिब, दीदार ख़जरसे.
कुचेमें तेरे आनेकी, ताक़त नहीं ऐ यार ;
मरता है पडा बरसरे, बाज़ार ख़जरसे.

येह हाल मेरा देखके, केहते हैं तबीबां ;
बचता है कोई इश्क़का, बीमार ख़बरसे .
ऐ नाज़नीं जो नाज़, उठाते तेरे दिलबर ;
पूछेंगे सभी कयको, बाहर ख़बरसे .

ग़ज़ले ताबां ३१२

इश्क़ क्या शै है किसी, कामिलसे पूछाचाहिये ;
किस तरह जाता है दिल, बेदिलसे पूछाचाहिये .
क्या लड़ाईमें मज़ा है, क़त्लहो प्यारेके हाथ ;
उसकी लज़्ज़तको किसी, बिस्मिलसे पूछाचाहिये .
जिसने उसका ज़ख़्म खाया, वो उसे मालूम हय ;
तेग़े अबरूकी सिफ़त, घायलसे पूछाचाहिये .
यारके मिलनेकी हमको, कोई तरह आती नहीं ;
तरह मिलनेकी किसी, वासिलसे पूछाचाहिये .
आहोनालेकी हक़ीक़त देखता हूं हिज्रमें ;
क्या गुज़रती होगी ताबां दिलसे पूछाचाहिये .

ग़ज़ले सौदा ३१३

खूबीये रुख़सारे खूबां, गुलसे पूछाचाहिये ;
इज़्तिराबे आशिक़ां, बुलबुलसे पूछाचाहिये .
जो गुज़रती है हमारे हालपर, ज़ुल्फ़ोंको देख ;
उसकी माहियतको तईं, सुम्बुलसे पूछाचाहिये .

ख़ंदए ख़ूबां जन्नतहै, ज़ाहिद नौशीरोंके ऊपर ;
जे ख़ुदीकी जात ज़, कामिलसे पूछा चाहिये.
अहले कशामीरो सक्काहां, ऐश करते हैं मुदाम ;
हिंदकी लज़्ज़तके लई, काबुलसे पूछा चाहिये.
लोग कहते हैं अजुल ज़ेर हल्क़ सोदा हुवा ;
कुछ ख़ेलाल खस मरज़का, काकुलसे पूछा चाहिये.

ग़ज़ले क़िस्मत. ३१४

गर वोह जुते काफ़िर शाबे, महजामपर आवे ;
अेक माह दोदम माहे, फ़लकको नज़र आये.
मिज़गां तेरी जिस दिलसे, मेरे दिलमें खुजी हय ;
ना सुफ़लह न देखा कोई, जख़्ले ज़गर आये.
मक़दूर है किस्का ज़े, तेरे हुक्मको टाले ;
रेस्लम ज़े न आये तो यही, उस्का सर आये.
तू अरसरे ख़ाज़र, ज़हां ज़ल्वनुमा हो ;
ख़ुरशीद फ़लकपरसे के, नीचे उतर आये.
ज़ूं माह ख़ुनव्वर हो, शबे तार हमारी ;
क़िस्मत वोह अगर चांदसी सूरत नज़र आये.

ग़ज़ले सिराज. ३१५

ख़बरे तहय्युरे इश्क़ सुन, न ज़ुनूं रहा न परी रही ;
न तो तू रहा न तो मैं रहा, जो रही सो बेख़बरी रही.

शोह्रे ज़ुहीने अता किया मुझे, अब लीबासे अह्ल नगी;
न ख़िरदकी जफ़ीयह गरी रही न, जुनुंकी परदहद्दी रही·
चली सिम्ते ग़ैबसे अेक हवा के चमन सुरूरका जल गया;
मगर अेक शाख़े नेहाले ग़म, जसे दिल कहें सो हरी रही·
नज़रे लगा कुले यारका शिकह, किस ज़बांसे बयां करूं;
के शराबे शोर कदह अगर न ख़ूम, दिलपेंथी सो भरी रही·
वो अजब घडीथी के जिस घडी लिया दरस नुस्खअे इश्क़का;
के किताब अक़लकी ताकमें, ज्युं धरीथी युंही धरी रही·
तेरे जोशे हेरते हुस्नका असर, इस क़दरसे यहां हुवा;
न तो आयनेमें जला रही, न परीमें जल्वह गरी रही·
कियाख़ाक आतशे इश्क़ने दिले बेनवाये सिराजके;
न ख़तर रहा न हज़र रहा, जो रहीसो बेख़तरी रही·

ग़ज़ले कुदरत-३१६

हम सफ़ीराने चमन, हमसे चमन छूटे हय;
हाय अेशोंमे ग़रीबोंके, वतन छूटे हय·
ग़मज़ओ शोख़से दिल देके, में अेसा भागा;
जेसे सेयादके हाथोंसे, हरन छूटे हय·
अब लबके तेरे शाही दोके, बुने हर मूसे;
साफ़ ईक्वार अपूं ज़ेरे, कई न छूटे हय·
राजे दिलबरांकी मुसीबतमें, लिखूं क्या कुदरत;

तनसे जां निकलेहै, और जानसे तन छूटे हय.

ग़ज़ले कलंदर ३१७

जो नसीबोंमे है दिन, अपने अबस रोता हय;
जो लिखा क़ातिबे कुदरतने, वही होता हय.
सईये मुत्लक़ अदम तुजको है, आख़िर दरपेश;
जागे ग़फ़लतसे तू बेदार हो, क्या सोता हय.
नहीं मुमकिनके मुग़ीलांसे, होवे पैदा.
फ़सली पाता है वोही, जो कोई कुछ बोता हय.
करले कुछ काम ग़नीमत है ये: अय्यामे ख़याल;
आक़बत लग्ज़में क्युं, उम्रको तू खोता हय.
ग़मकी पेचीशसे कलंदर तू न कर दिलको तंग;
फ़िक्रका दाम भला ऐसाही, कुछ होता हय.

ग़ज़ले रिंद ३१८

क़त्ल जो हम यारकी, शमशीर तले बैठ गये;
वोः ख़ल्वत रात रहे, हम नज़रसे बैठ गये.
हम उठे यारके दरपरसे, चले सौ सौ बार.
सूरते मनसूरके, मानिंद चले बैठ गये.
गुलशने दहरमें दोरोज़, अबस आनके हम;
सरूकी तरह न उठे न उठे, बैठ गये.
जब हुवा मजमअे, अग़यार सुनो हज़रते दिल;

उठ चले आनके तुम यहां भी, जले बैठ गये·
ये तो हम ख़ुश थे कि क़ुरबान हों, हम फिरके रोज़;
हम भी घबराके न हारे, न रहे बैठ गये·
अश्क की सैलसे और, आहके शोलेसे मेरे;
अक़्ल और होशके, घरबार जले बैठ गये·
कैसी इरहादसे ये रिंद मिले, हम कलवार;
राजे यहां तक गले खिल मिलके, गले बैठ गये·

ग़ज़ल सेसौहान ३१९

नसीम है तेरे कूचेमें, और सबा भी हय;
हमारी ख़ाकसे रुउ देब, कुछ रहा भी हय·
तेरा ग़ुरूर मेरा इज्ज़, ताकुजा ज़ालिम;
हर एक बातकी आख़िर, कुछ इन्तहा भी हय·
जले है शम्अ़से परवाना, और मैं तुझसे;
कहीं है मेहर भी जफ़ामें, कहीं वफ़ा भी हय·
ज़बाने शाक यह सिवा, अब ज़मानेमें है हाल;
कोई किसीसे है हमदम, और आश्ना भी हय·
सितम रवा है असीरोंपे, इस क़दर सय्याद;
चमन चमन कहीं बुलबुलकी, अब नवा भी हय·
समझके रखियो क़दम, दश्ते ख़ारपर मजनूं;

के ऐस ज़नयाहमें सौदा जिरहनां पाति हय.

ग़ज़ले आशिक़ ३२०

आज क्युं तूने लला हमसे मिलाई प्यारे;
बुझ गई थी सो फिर, अब आग लगाई प्यारे.
दोस्ती मेरी तेरी यार, मिलाये अल्लाह;
गरचे बदनामी ज़मानेमें, उठा गई प्यारे.
खानगे दिलमें मेरे लडके है, अब आतशे इश्क़;
शकल तुने भी नहीं अपनी, दिखाई प्यारे.
मैं सिवा तेरे किसीकोभी, न देखूं हरगिज़;
साथ ने अपने मगर होवे, खुदाई प्यारे.
दिलसे दिल आंखोंसे आंखोंको, मिलाकर तुमसे;
किसको खुशी आती है अब, तेरी जुदाई प्यारे.
हफ़्त इक़लीमकी शाही, नहीं खुश आती हय;
खुशनुमा है तेरे कूचेकी, गदाई प्यारे.
ये तो आराम नहीं, अक़ल गई होश गया;
दिलको आशिक़के नज़र, जबसे लगाई प्यारे.

ग़ज़ले सौदा ३२१

जूं गया तु चमनमें, जरे क़बाको खोले;
फ़िर गुलसे ऐ प्यारे, बुलबुल कलून बोले.
आयेगा वोह चमनमें, तडकेही पै कलीको;

शबनमसे करके बुलबुला, प्याले गुलोंके धोले·
जागे ख्वाबमें आकर कुछ, हमने कल न पाया;
इक दिल मिलाके जिस्में हैं सैकडो मलोले·
ऐसाही भरी भरी करते होता सिपारो;
घिस दिल्पे कलके होनी सो, आनही थो:होले·
कुप बोलना अदाहे, हरचंद परन छेलना;
मुंह अबसें चश्मे आशिक, तोली थो:लबलबोले
चश्मे पुर आबहूं मैं, तुं आइनां हुबाबी;
रेकडे पडगये हैं, छातीमें सब फफोले·
कौन ऐसा अबकै यह, सोहागलीमें उसकी;
ला तुजको लेचलें हम, दिल खोलकरके रोले·

गजले रदीफ त·३२२

नेशाबे हिजर, मुंह दिखाती हय;
जान रईअतकी, लबपे आती हय·
येह बुराई, जिगर जलाती हय·
आंख ली अश्कसे, खूं बहाती हय·
दिलतो कुछ चैन जगह नहीं मिलता;
पेहले येह आंख, घर डुबाती हय·
चश्मे परीशाँ ताकी, समझ हय येही·
जैसा करती हय, वैसा पाती हय·

ग़ज़ले मईसून. ३२३

सुबहमें तेरी ज़ुल्फ़ोंके, और तार तारके ;
दस्तारे गुल अनार, कभा जूड़ा हारके.
बुलबुलने चहले कहके, रोरोके यूं कहा ;
सैयाद चारले मेरे, परपरहेगारके.
बेचोगे तो सहीह तरह, इतनातो कीजियो ;
दीजेतो हाथों हाथ, किसी नौ बहारके.
यह चलन है हमारा, तुम पूछते हो क्या ;
हम रहनेवाले हैं, इसी बाग़ो बहारके.
मईसूं तु शाद रहियो, ज़माना करेगा क्या ;
हम हैं गुलाम उस शाहके, गुल गुलसवारके.

ग़ज़ले यक़ीन. ३२४

करते हैं अपने बाल, दिखा मुब्तला मुझे ;
इस पेचसे बुतोंके, निकाले ख़ुदा मुझे.
दिलने तो मेरे दी है बढा, दूरनेकी कदर ;
करती है बाल बालसे, चलते दाग़ा मुझे.
बेरो नज़्में यार बोहोत, हो गया दिलेर ;
करनी तो की परास्त, न आई वफ़ा मुझे.
मैं गो रहा हूं यारके, पांउपर अय यक़ीन ;
आई है शास्त साथ अे, गुलकी हवा मुझे.

ग़ज़ले नियाज़ ३२५

सनम है गुलबदन है, महजबीं हय;
भला कहिये वोह क्या क्या, कुछ नहीं हय.
वोह सब्ब है, वोह किस जगह नहीं हय.
ग़रज़ उसको, जहां देखो वहीं हय.
गया ईधरको, फिर ईधर न आया;
अजब कूचेकी तेरी, सरज़मीं हय.
मेरे अश्कोंका, और नालोंका शाहिद;
ज़मीनो आस्मां, अर्शे बरीं हय.
जहां जिसके मुक़ाबिल, हूरो ग़िलमां;
सनम नामे ख़ुदा, वोह नाज़नीं हय.

ग़ज़ले ज़हर ३२६

ख़दंगे शिकवोंके जबके दहलर, ईधर हमारे उधर तुम्हारे;
तो क्याक्या गुज़रेगी आह दिलपर, ईधर हमारे उधर तुम्हारे.
लड़ान हमसे अे मेरे दिलबर, ये बात जानदो मानो कहना;
नहीं तो महशर होंगे घरघर, ईधर हमारे उधर तुम्हारे.
हमारे दिलपर है दागे हसरत, तुम्हारे मुंहपर है दाग़ख़ीऊ;
यह दोनो यमकेंगे मिस्ले अख़्तर, ईधर हमारे उधर तुम्हारे.
तुम्हें जब अपनी क़सम है, भला मिलो तो ऐसा मिलो कि जैसे;
ग़मे जुदाई न आये दिलपर, ईधर हमारे उधर तुम्हारे.

मिज़्गाँमें क्युंकर छुपाऊं हैरां, अगरचे दोनो तरफ़ है आ़हरी;
फिरते हैं मसूस यहां तो घर घर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.
सितम करोगे क्या तुम जवाब दोगे, जलाने पूछेगा तुमको मिलिक;
होवेंगे मुनासिफ़ जरोंने महशर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.
शराब है यह समझ के पीना, शराब कहता है उसको आलम;
कहीं निशेमें फुलेंन लेहर इधर हमारे उधर तुम्हारे.

ग़ज़ले आसिफ़ ३२७

जिस घड़ी तेरी आस्तांसे गये;
हमने जानाके दो जहांसे गये.
तेरे कूचेमें नक़्शे पाकी तरह;
ऐसे बैठके फिर न यहांसे गये.
इश्क़ हाथोंसे तेरे क्या कहिये;
नामसे गुज़रे और निशांसे गये.
शम्अकी तरह रहेता रहेता हम;
सुन्यो एक दिनके जिस्मो जांसे गये.
एक दिन हमने यारसे यह कहा;
आजतो हम ताक़तो तवांसे गये.
हंसके बोलाके सुनता है आसिफ़
युंही कह कहके लाखों जांसे गये.

ग़ज़ले रख़्त · ३२८

झ़िंझपे तेरे देख्ये, क़िसशानकी सुरखी ;
पोंहचे न जिसे पंजे, मरजानकी सुरखी·
तां-रीफ़ दहनकी करूं, या लबकी नज़ाकत ;
मिस्सीकी उदाहट कहूं, या पानकी सुरखी·
अल्मास नज़र आते हैं, याकुतके मानिंद ;
पडती है करन फूलपे, जब कानकी सुरखी·
क़ातिल मुझे करेहे, कोई पेहचान न लेवे ;
धो डाल ज़रा गोरीए दामानकी सुरखी·
सुन्ये यह ग़ज़ल मुझसेती, जब तान रखकी ;
दिखलाती तुम्हें साक़ी, गुलिस्तानकी सुरखी·

ग़ज़ले क़िदवी · ३२९

आकूली ख़िज़ल होवे, मुसव्विर ज़रा देखले,
तस्वीर खिंची आतीहै, नरगिसका क़लमसे·
देखा नहीं तु अहमद, मुख़्तारका लश्कर ;
जिबरीलली जिस कोहमें, चलता है ज़लमसे·
गरमीसे अरक़ होगये, चलते हुए यः अरक ;
इस सायःमे मिज़ुगां तले, कुछ बैठके दमले·
हम दिल्को गंवा बैठे, तसव्वुरमें उसीके ;
और किरली अक़्लमंदीसे, चलराहे अदमसे·

इस्मातकी पुरसिशके लिये, शौक़ हुये तुम ;
काफ़िरको चले नामे ख़ुदा, नामे सनमसे·
यह बारगह मेरे ख़ुदा, लाये अदब हम ;
मजनूंको सदा पोंहची है, तू उसे रक़मसे·
नाहक़की यह तोहमत हैके, गैरोंपे है आशिक़ ;
गर तेरे सिवा गैरको, चाहूंतो क़समसे·
रातोंके तड़पे चौंक पड़े, नींदमें केलम ;
गर ख़्वाबमें देखे, असदुल्लाहके क़मसे·
किदवीतो कफ़स अपना, गिरेबां है पड़के ;
सेता है तो दामाने, अली मुरतज़ा कमसे·

ग़ज़ल· ३२९

किसको दिखलाऊं, आबले दिलके ;
ज़ख़्म ताज़े हुये हैं, छिल छिलके·
उसकी नैरंगीपर, फ़िदा हूं मैं
गुल बनाये हैं, जिसने हँस गिलके·
कुछके नागनने, आपकी साहब ;
दिल लिया है हमारा, हिल हिलके·
तुझसिवा बाग़का यह, क्या अहवाल ;
फूल कुम्हला गये हैं, खिल खिलके·
हसरता अपनेकी, करें तौबह ;

रंज जैसे हैं, तुमसे मिल मिलके.

ग़ज़ले नासिख़ ३३०

फिर बहार आई चमनमें, ज़ख्मे दिल आले हुये;
यह मेरे दाग़े जिगर, आतशीकेपर डाले हुये.
किस तरह छोड़ूं यकायक, तेरी ज़ुल्फ़ोंका ख़याल;
एक मुद्दतसे यह, कालेनाग हैं पाले हुये.
वाह क्या तासीर है रुख़्सारे आतशनाककी;
शोअ़ले ऐ नख्याल तेरे, कानके बाले हुये.
जब रहे तारीकमें, हम कूचे जनाज़े चले;
आगे आगे जलके मश्अल, आतशीं नाले हुये.
पाके नाज़ुक उसने नजर माहपारी क़मरपर;
पार हाके संगमरमर, रुख़के गाले हुये.
वोह परी पैकर कहा, करताहै अकसर फ़ख्रसे;
अजतो नासिख़ली हमारे, याहने पाले हुये.

ग़ज़ले ज़का ३३१

ये रुख़े यार नहीं, ज़ुल्फ़े परेशांके तले;
है नेहां सुब्हे वतन, शामे ग़रीबांके तले.
जब कसी तेग़ जो उस, उसकी चमकती देखी;
तिफ़्ले अश्क आही छिपे दामने मिज़गांके तले.
एक नेहां दाग़े जिगर, सीनेमें रखताहूं के मूं;

જાહસે શમ્સ છિપાયે, કોઈ દામાકે તલે.
જોમેં હે ભેંકે કૂં, એ ગુલેખંદાં તુઝબિન;
એ કહર ગિરિયાકિસી બરસે ગુલિસ્તાંકે તલે.
નહીં મિલ્નેકી જગા તુઝકો, બજુઝ કુંજે મઝાર;
બસ આસૂદગી ઘેસ ગુજરે, ગરદાંકે તલે.

ગઝલે નઝીર. ૩૩૨

બખ્તાને ઉસ્ને દિખાયા, મેરા જી જલતા હય;
ફિર ખુદાહી નજર આયા, મેરા જી જલતા હય.
ઉઠ ગઈ મેરી નજાંસે તો, બહારી લઝ્ઝત;
બે મઝ ઘેર્ઝમેં પાયા, મેરા જી જલતા હય.
મેં બતાયાર કહું ખતકઘુંકે, સિખું અય સાહબ;
બેસા લોગોંને સિખાયા, મેરા જી જલતા હય.
કોન કહેતા હે તેરે, ઘેર્ઝસે અંજાન રહા;
જતેજી તૂને જલાયા, મેરા જી જલતા હય.
અય નઝીર ઉસ ગુલેખંદાંકી, મહફલ તુઝકો;
હમ જહમ ઉસ્ને સતાયા મેરા જી જલતા હય.

ગઝલે જોહાર. ૩૩૩

કોનહે બાલરે ખૂબીમેં, તેરે હમ સંગ હય;
હુસ્નકે બીલમેં તેરે મેહરો, મહપા સંગ હય.
સુરમઈ આંખોંકા તેરે બે, કોઈ બીમાર હો;

एक मील उसके तर्फ़ रखना, कुछ ईस संग हय.
मैं जो दीवाना हुवा सरफ़ैले खरजाजे जुनूं;
हाथमें पथ्थर लिये, हरतिफ़्ल मेरे संग हय.
जब्से तड़या आशिक़ोंका, जानमां हरयक़ले जाय;
जेरे सर कूचेमें तेरे, ख़िश्त है या संग हय.
सख़्त जरी है मुझे, ज़ालिम तेरी संगदिली;
आह जिसने आस्याके संग उपर संग हय.
वोह सदा गिरगीर करेहै, आस्या फिर फिर मुदाम;
मुश्ते गंदुमके लिये, छातीपे मेरे संग हय.
वोह जवाहर पोशके देखाहूं, मैं याकूत लब;
उसकी रंगी नीके आगे, लालकी एक संग हय.
शेखकी मस्जिदमें जाना काम क्या जेहारका;
सिजदेमें अपना सनम ले, आशिक़ोंका संग हय.

ग़ज़ले जाहरशाह. ३३४

किसी मस्तके आनेकी आरज़ू हय;
के साक़ी लिये साग़िरे मुश्कबू हय.
समाया है जबसे तू आंखोंमें मेरे.
जिधर देखताहूं उधर तूही तू हय.
बताउं मैं क्या अपना हाले परेशान;
ज़यां ज़ुल्फ़े दिलदारके रूबरू हय.

चलो क़्वे ईरगाहपर, ख़ातेहाक़े ;
मगर आबे शीरीसे, जानम वुजू हय·
निकल जावे दम, तेरे क़दमोंके ऊपर ;
यही दिलकी हसरत, यही आरजू हय·
गुलिस्तांमें जाके, हरअेक गुलको देखा ;
न तेरीसी रंगत, न तेरी सीबू हय·
सतायाहै नाहक हमें तूने जालिम ;
येह ईनसाफ अल्लाहके रूबरू हय·
किया चाक वहशतने, अैसा गिरेंबान ;
न सीनेके क़ाबिल, न आजे रफू हय·
शफ़क़ जनके गरदूंपे, होता हय ज़ाहिर ;
येह किस कुश्तअे, बे गुनहका लहू हय·
अ़जेस मुझको हंस हंसके, देतेहो गाली ;
ज़बांको संभालो येह, क्या गुफ्तगू हय
अगर उनकी जारी शबे वस्ल बोला ;
छुरी और मुरगे, सहरका, गुलू हय·
रहे सायअे पंजतन, बाहशाहपर ;
दुआयरे आलम, निगहबान तू हय·

ग़ज़ले नंबर· ३३५

हजारजानसे हम थाहसे जलातेथे ;

तो किस गुरूरसे तुम, बेक़रार आतेथे·
अभीतो शरते वफ़ा, होचुकी अहदाजसकर;
ऐसी भरोसेपे तुम, दोस्ती निभातेथे·
ज़रातो याद करो, जब वक़्त वोह क्याथा;
गलेमें हाथथा और, मुंहसे मुंह मिलातेथे·
लबे शकर वोह अजब, दिनथे भूलतेही नहीं
तुम्हारे मुंहसे जो हम, गालियां भी खातेथे·
अगरचे रूठके जातेथे, फिरभी हम तुमको;
गलेसे अपने लगा, पांवपड़ मनातेथे·
हरएक तेगे सितम हमको, फूलकीथी छड़ी;
ऐ गुलबदन तेरी क्याक्या, नाज़ उठातेथे·
हुनर कैकेके कहतेहो तुम, कमर मत आ;
कभी ज़बांके उपरभी, येह न लातेथे·

ग़ज़ल बेरारर·३३६

क्या निकले सुख़न आशिक़े, दिलगीरके मुंहसे;
कोई बात सुनता होगा, न तस्वीरके मुंहसे·
किसकी निगहे चश्मने, मारा है तमाचा;
बहता है लोहू ख़ंजरो, शमशीरके मुंहसे·
चुसुकूको किया क़ैदके, जो ज़िंदानमें खुशहो;
आती है सदा कानमें, ज़ंजीरके मुंहसे·

लिखूंकी के तेरे हुस्नके मैं वस्फ़ कहूं क्या ;
सुन मुंहसे नवाबोंके, हर अेक पीरके मुंहसे ·
हेता है दोआ तुझको, सनाओं यह शेरर नज़ ;
आमीनकी सदा निकले है, तासीरके मुंहसे ·

गज़ल रेखती · ३३७

जिसको लनवत है, सबनके दीदकी ;
उसको फुरायकली है, सुभके ईदकी ·
मुजके उपर नुकई मे, दरयामे हुस्न ;
मौज है यह यस्मसे, मे फुरशीदकी ·
दिल मेरा मोती हो, तुज बालीमें नज ;
कानमें केहता है, बातें लेदकी ·
तुज दहनको देखकर, बोला वली ;
यह कली है गुंच, मे उम्मीदकी ·

गज़ल रेखतम · ३३८

दर्द मंदोंसे न पूछो के, किधर बेठगओ ;
तेरी मजलीसमें गनीमत है, जिधर बेठगओ ·
हे गरब दीदकी यहां, काम तकजुंईसे नहीं ;
आह उधर बेठगओ, आह उधर बेठगओ ·
मुकल उठनेके नहीं, यारके कूचेसे कदीर ;
अेक बोसेके लिओ, बांधके कड बेठगओ ·

पीरोमुरशीदकी क़सम है, यही लेंगे यही;
नज़अके बिस्तरपे न मजा जोश, क़मर बैठगये.
कर गया काम न माअशूक़, सितमने न गुज़ा
सैकड़ों मुर्ग़ हवा बांधके, पर बैठगये.

ग़ज़ले नज़ीर. ३३९

मुरग़े दिल मतरो यहां, आंसू बहाना मनअ है;
इस क़फ़सके क़ैदियोंको, आबोदाना मनअ हय.
तेरी ही दीदारसे अब, हमने सरपरका किया;
रोनने दीदारतक, आंखें मिलाना मनअ हय.
क़त्ल करकर मुझको अब, संगी दिलोंने युं कहा;
क़त्ल होजना लेकिन, तड़फड़ाना मनअ हय.
तड़फना मत देखना, ऐ नज़रतले ऐसे दे दिल;
ग़ैरके क़त्लमें दस्तोपा, हिलाना मनअ हय.
ऐ नज़ीर तुमको हमेशा, चाहिये इशरत मुदाम;
अब तुम्हें चालीस दिन, मेंहदी लगाना मनअ हय.

ग़ज़ल. ३४०

वोह सनम हाल मेरा क्या जाने;
हूं मैं किस फ़िक्रमें खुदा जाने.
उसके मिलनेकी मुझको तोहमत हय;
वोह कहां मैं कहां खुदा जाने.

હમતો રોતેહૈં હસ્તેહૈં અગયાર ;
કહર બુલબુલકી લગા ક્યા અને·
હોઠ યારાકે વોહ સારી ઉમ્ર ;
લબે શીરીકા ને ઘલ અને·
સુનકે અહવાલ મેરા કેહને લગા ;
ઐસા ઝગડા મેરી જાંના અને·
ઐસે સઈઁકસે ડરો યારો ;
ખૂન આશિકકા ને હિના અને·
બેખુદ બુતે કિસીકે દોસ્ત નહીં ;
ઉસકો દુશમનહી અનકા અને·

ગઝલે ઔસાઈ · ૩૪૧

વોહ કહાં બસે રહે, ને બેવફાઈ કરગએ ;
મરગએ આખિર ન કિસ્સે, આશનાઈ કરગએ·
ઉમ્રે બે પાયાંપે અપની, ઐસ કદર ના અનહો ;
મર્ગને ઉનકો ન છોડા, ને ખુદાઈ કરગએ·
આરસીમેં અકસ અપના દેખકર લાએ ગુરૂર ;
ચાર દિનકી ઝંદગીમેં, ખુદ નુમાઈ કરગએ·
ઝેબ અઈ કરકે અકસર વોહ, બેહસ્તપે કિસે·
હાથસે અપને વોહ અપની, નગનુમાઈ કરગએ·
રેહ ગયા ઔસાઈ અંત ઓર, આખેર રીહાનો ગએ ;

जे भलाई करगये, औ जे बुराई करगये·

गजले इशरत ३४२

शबे फिराकमें दिलपर, फलक अलीसे हय;
सहर है दूर पेरा रंग, फूक अलीसे हय·
अली सिवा नहीं मैं हाल दिलका ये कासे द;
हुवा भे शौकमें उडता परक, अलीसे हय·
हनोन दफ्न हुवा हय नहीं, तेरा बिस्मिल;
के गलगलेमें नपीका लजक अलीसे हय·
इरादा सैरका करता है, गजके वोह गुलरू;
यह नाजुकीके गजीपर, अरक अलीसे हय·
किसीने शामके आनेको क्या कहा इशरत;
यह मुहपे आपके फूली शफक अलीसे हय·

गजले हैदरी ३४३

दागे महफिलमें तेरे हलतो, अलज घूमरही;
राह पाई न कहीं जोह, सजा घूम रही·
मोत्या और चंबेली, गुले नसरीनो गुलाब;
केतकी मस्त हो डालीपे, सदा झूम रही·
पानतो कत्ल हुवे यारके, लबसे मिलकर·
जे कलीथी सो हिना, बरके पा चूमरही·
काकुया ठीक नथा, क्या करे पर हैदरी आड;

अक्ल पंजेकी तरह, [illegible]ने तर्ह तूम रही·

ग़ज़ले नासिख़· ३४४

नैनमें यारके है, यार नज़र आता हय;
सीनेमें रौज़ने दीवार नज़र आता हय·
दश्ते गुरबतमें निगह, अपनी जिधर जाती हय;
वही कूचा वही बाज़ार, नज़र आता हय·
मय परस्त ऐसे हैं, सोते हैं अगर मस्जिदमें;
ख़्वाबमें ख़ानए, ख़म्मार नज़र आता हय·
चांदसा चेहरए ताबांहे, मगर ईस्परसी;
जुल्फमें रंगे शबे, तार नज़र आता हय·
लाग जाता है यही, पैके अजल आखीरे·
जब मुझे कासिदे, दिलदार नज़र आता हय·
गरचे हूं हिंदमें लेकिन, मुझे नासिख़ हरदम;
रौज़ए अहमदे, मुख्तार नज़र आता हय·

ग़ज़ले यक़ीन· ३४५

नज़रमें जाओंकी, इस जानेको क्या कहिये;
क्या काम किया दिलने, दीवानेको क्या कहिये·
आशिक़ जो रहे जलता, माशूक़के काम आवे;
क्या खूबी है जलजाना, परवानेको क्या कहिये·
दिल छोड गया हमको, दिल्बरसे तवक़्क़ो क्या;

अपनेने किया येह कुछ बेगानेको क्या कहिये.
तहकीक़को ज़ालिम ख़ूं, कुछ उसमें नईं समाया;
फ़रहादके घिस नाख़ुनके, मरजानेको क्या कहिये.
सजनेमे यही आफ़ क्या, यारीसे फिरते हैं
फिर दोसे न कहिये तो, दीवानेको क्या कहिये.

ग़ज़ले जलहार. ३४५

दिलको पासथा जो दौलत, हमने ज़बरदारीसे;
नाक़ जरदारीसे, हुश्यारीसे ग़मख़्वारीसे.
कुसने साहबजडी शैराईतपे, नज़र कर बैठे;
जनके जूड़के पेहश्यानके, हुश्यारीसे.
हमसे जालिममें जइ गैरोंपे, जहरमें नइ;
यां तो उम्मीद नथी, शरते वफ़ादारीसे.
साहगीपर वोह सिलमगारके धोका पाया;
अपना ईमान जरनता है, येह अैयारीसे.
शुक्र हक़ सबकी दौलत, के शबे हिज्रके दिन;
वस्ल हासिल हुवा, तालेकी मददगारीसे.
नाने जत लुत्फ़ अदा, वस्ल मिज़ाह और अन्दाज़;
सबके सब दुश्मने, क़ातिलहैं मेरी यारीसे.
सो रहे आन लिपट, अपने सनमसे जलहार;
नींद आती है शबे, हिज्रकी बेदारीसे.

ग़ज़ले शाहां ३४७

माशूक़के आनेकी, शिताबी ख़बर आवे ;
अल्लाह करे दिलकी येह, उम्मीद बर आवे ·
ख़ुरशीद ख़जल होके, छिपे अब्रके अंदर ;
महफ़िलमें अगर आनवोह, रश्के क़मर आवे ·
करताहै निसार उसपे, फ़लक ख़ोशाये परवीन ;
कानोंमें करनफूल, पहनकर अगर आवे ·
किस कामका वोह नख़्ल, जिसे फूल न फल हो ;
परशाख़ वही ख़ूबहै, जिसको समर आवे ·
आता नहीं दिलदार नज़र, किससे कहूं मैं ;
है मुन्तज़र आंखेंके, कोई पस नज़र आवे ·
शाहां तू ख़ुशी अपनीसे, कह मतलए सानी ;
माशूक़ ले आग़ोशमें, तेरे अगर आवे ·

ग़ज़ले नज़र ३४८

हमतो आशिक़हैं तेरे, नाज़ उठानेवाले ;
तुमसे कम देखेहैं, महबूब सतानेवाले ·
बंदकर क़ैद महब्बतमें, ख़बर मेरी न ली ;
दाममें किसके फंसे, दाम छुड़ानेवाले ·
कल शबे वस्लमें क्या, जल्द चलीथी घड़्यां ;
आज क्या मरगये, घड़्याल बजानेवाले ·

कल जो रस्तेमें मुलाक़ात हुई तो येह कहा;
कहां चले हो तरफ़दार जलानेवाले·
गुज़री मुद्दतके मेरे साथ, जपरे नहीं आये;
क्या हुए यारो गले, हमको लगानेवाले·
यों तो अवक़ात गुज़रती है, मज़ेदारी में;
न मिले चैन मज़ेदार दिखानेवाले·
अबके मिलना हो नज़र, यारसे कहना जाके;
क्या ख़ता हम न रहे, यारो भुलानेवाले·

ग़ज़ल ई ना· ३४९

एक दिनभी तेरे मिलनेकी शब हात न आई;
वोह रात गई रातकी, फिर बात न आई·
और रोज़की शबे वस्ल, मोयस्सर हुई क्युंकर;
हम मलते रहे हाथ के, कुछ हात न आई·
कल रातको बातें हुई, तेरी और मेरी·
और इसके सिवा दरपेश, मेरे हात न आई·
थे तेरी बातथीं, मगर आनेके ख़ातिर;
कहते हैं कही तुझसे तो, वोह बात न आई·
अब ज़िंदगी बाक़ी है तो, फिर आन मिलेंगे;
पर तेरी मोयस्सर थे, मुलाक़ात न आई·
ईमान दिलोंही अक़्लको, सब छोड़ गये हम;

इन बातोंमेंसे एकभी कोई बात न आई।
जरूरोंकी घटा छाई है, असोंमें दुलारु ;
इस्तौरकी नंगी कुली, बरसात न आई।

गज़ले नासिख़ ३५०

कमर तेरी गुम है, मुझे जुस्तजू हय ;
दहनकी जहां है यही, गुफ्तगू हय।
जो हैं मुशिगाफ उनकी येह गुफ्तगू हय ;
कमरका तेरे जिस्मपें, एक मू हय।
तेरी आरजू हो, अगर आरजू हो ;
यही आरजू है, अगर आरजू हय।
येह अंधे हैं जो कहते हैं, हम हैं हम हैं
जो आंखें हों रोशन तो, फिर तूही तू हय।
किया पानी पानी, तेरे हुस्नने ऐसा
के सरवे लबे आबे जू, आबजू हय।
न मैं हूं मुखातिब, न तू है मुखातिब ;
यही मैं यही तू, न मैं हूं न तू हय।
जो ही बेनेहत है, वही शीनेहत हय ;
जो एक सू है सबसे, वही चारसू हय।
तसव्वुर जो है, दहनकी तरह नासिख़ ;
जिधर देखता हूं, यही रूबरू हय।

गज़ले वहशत ३५१

क्या जला है मेरे सर हुस्न, आशनाई आपकी;
मार डाले है गरज़ हमको, रुखाई आपकी.
किस भरोसेपर रजू होवे, तुमसे अब यकसू वहां
जल्दपर मशहूर होगी, बेवफ़ाई आपकी.
झिड़कियां हर आन देते हो, सरे मजलिसमें तुम;
ऐसी क्या साहिब हुई, हमसे बुराई आपकी.
बात करना हमसे और, आंखें लड़ाना गैरसे;
देखली बस वाह मुश्किल, पारसाई आपकी.
क्या शिकायत है मेरी जान, तुमको वहशतसे कहे;
अब तलक हमने तो कुछ, मज़ा न पाई आपकी.

गज़ले मुरसल ३५२

ले आईना मांग (संथो) उसने अब, यक बार निकाली;
मुस्कातसे क्या राह, जुमूदार निकाली.
वोह कुल्ले उलझके देखे न बक्समें आकर;
मुंहसे न शिकायत कभू, अय यार निकाली.
युं आन तेरे कूचेके, आशिकोंने मसिम;
सारी उसकी जलोहर सरे, बाज़ार निकाली.
नखरेकागर शौक न था, उसकोतो उसने;
क्युं बामपे खिड़की सरे, बाज़ार निकाली.

हम साथे जुगनें लगे, [illegible] अपने घरोंको ;
मैं दिलसे न येक आह, बारबार निकाली·

ग़ज़ले महकुम · ३५३

कहे हो किसलिये बेज़ार हमसे ;
भला कुछ तो कहो, दिलदार हमसे·
तुम्हारीही रुकावट, बासबब हय ;
जो लडते हैं येह सब, अग़यार हमसे·
मेरा हय सच जहम परवाने किस्मत ;
हुवे जरहम जो जुदे, यार हमसे·
जुनूं क्या तुमको कुछ, सौदा हुवा हय ;
जो लडता है सरे, बाज़ार हमसे·
मुकर्रर जब कहा, मैंने अकड़के ;
भला कुछतो कहो, दिलदार हमसे·
तु रुककर युं कहा, चल उठ यहांसे
अबस महकुम न कर, तकरार हमसे·

ग़ज़ले जलीक · ३५४

मुरग़ांने कफ़स करते हैं, सब नग़मह सराई ;
क्या कस्ने बहारीकी, चमनसे ख़बर आई·
आशिकको तो नरगिसने, आंख दिखाई ;
कर चाक गिरेबान, नसीमें सहर आई·

उस यारके मिलनेकी जो उम्मीद मुझे थी;
क्या राह गई भूल, कज़ा तु किधर आई.
जिस घरमें के हम रेहतेथे, मुद्दतसे हम और यार;
खाली जो मकां देख मेरी, चश्म भर आई.
बीमारकी ले जाके ख़बर, अपने मसीहा;
क्या फ़ायदा है उससे, अजलकाम कर आई.
गुलशनमें किसी शख़्सका, ऐक ठेर है बुलबुल;
मिनक़ारमें ले आके यहां, फूलघर आई.
ऐसा तो कहीं देख्या हुवा, होगा जहांमें;
आक़िल जो ख़लीके निगर, आईगार पर आई.

ग़ज़ले आशक़. ३५५

अरक़ जब उस परीके चेहरे, जो पुरनूरसे टपके;
फ़जिल हो गुलसे शबनम, जूं लोहू नासूरसे टपके.
मेरी आंखोंसे ख़ूनी अश्क, यूं गिरते हैं पलकोंपर;
लोहू सूलीके ऊपर ज्यूं सरे, मन्सूरसे टपके.
अगर कोई सख़ुन मेरा नेहाले, ताकको पोंहचे.
सुराहीशाख़ जन जाये, शराब अंगूरसे टपके.
अगर उस बुतके मुखके आमेनसे, चीनीमें जाल आये;
अजबनें छेतरो अंबर कासमे, फ़ग़फ़ूरसे टपके.
करूं फ़रयाद रोरो यारको, जब याद कर आशक़;

हम ऐसे आशिक़को लोहुसी, जागे सूरसे रपके·

ग़ज़ले आशिक़ ३५६

उस रंगीलेने जो हाथोंको, लगाई मेंहदी ;
कौनसे बाग़की सब्ज़ डलियाँ, मंगाई मेंहदी·
अर्शके गुलशनसे हुवाथा तरो, ताज़ा वोह हरफ़ल ;
जिसकी डालीसे अजब तुमने, तुड़ाई मेंहदी·
रश्के इन्नाब किया, दस्ते हिनाईके तई ;
पोर पोर अपनेपे, जिस वक़्त रचाई मेंहदी·
उड़गया देखनेकी रंग, शफ़क़का नागाह ;
जेबदम जिसके हथेलीकी, दिखाई मेंहदी·
हाथमें सुरखी न समझे, कोई आशिक़ उसके ;
किसी आशिक़का हय दिल, मुट्ठीमें लाई मेंहदी·

ग़ज़ले शुजाअत ३५७

हुवा क्युं ख़फ़ा तू मुझसे जहां हय ;
हुवा है ना कोई, होगा कहां हय·
तेरे नक़्शे क़दम, पाके बराबर ;
ज़मींसे दरक़ ताज, आस्मां हय·
रखे सरपर न क्युंकर, कुलकुलाह वोह ;
दिलेरो दिलावरो, रुस्तम ज़मां हय·
निशाना क्युं न हो, दिल आहे तेरा ;

निगाह एक तीर है, अब्रू कमां हय.
ज़बरसे नश्र जाय, मेरे मसीहा ;
मेरे दुश्मन जंजरे, निगाह मुलां हय.
शाबासत क्या पडे, उस ज़ुल्मी अज ;
परी वश कामकां तो, जे निशां हय.

गज़ले सिराज ३५८

दिलके पुरने हुये अब, एक दाग़ बाक़ी हय ;
सब तो आखिर हुए हिताब, एक सबक़ बाक़ी हय.
दूर है मुझको शबे ज़ुल्फ़में, मगरिबकी नमाज़ ;
उस शोखकी लबे पेगूंका, शफ़क़ बाक़ी हय.
तुझ कद पाकी खिजलत, सेहर एक गुलशनमें ;
कुलपर कतरये शबनमसे, अरक़ बाक़ी हय.
नगाह उस आबे परेशांकी, यही है तासीर ;
गैरफानी है मगर ज़ख्मे, हक़ बाक़ी हय.
मन देता है तेरे हिज्रकी सख्तीसे **सिराज** ;
या शिताबीसेती अयमन, रमक़ बाक़ी हय.
शरबते वस्ल पिला, वक़्त सफ़रका आया ;
उन्ते नशीमें तेरी मन, ख़ूत बाक़ी हय.

गज़ले मज़मून ३५९

तमन्ना सैरे गुलशनकी, अलीसे याद बाक़ी हय ;

नज़र कैदे क़फ़स गुलसे हो, फ़िरयाद बाक़ी हय.
लोहू दामनसे तु धोया तो क्या लेकिन क़ियामत तक;
हमारा खूं तेरी गरदनपे, ऐ जल्लाद बाक़ी हय.
मैं देखा बागमें आकर, न गुल है और न गुंचा हय;
चमनमें बुलबुलोंकी हसरते, फ़िरयाद बाक़ी हय.
मैं देखा लैली मजनुंको, और फ़रहादो शीरींको;
पले अरमान इस तस्वीरका, बेहज़ाद बाक़ी हय.
न लोहू है जिगरमें और, न आंसू आंखमें मेरे;
मगर बूए मुहब्बत दिलमें ऐ, फ़स्साद बाक़ी हय.
निकाले ख़ंजरी फ़ुस्से, उठाके अय परी पेकर;
के तेरे इश्कमें हमको, मुबारक बाद बाक़ी हय.
सखुनके पहले थे उस्ताद, उनका होगये यारब;
मगर इस वक़्तमें मक़बूल, एक उस्ताद बाक़ी हय

ग़ज़ले सोहानं ६०

हम हैं वारस्ता, मुहब्बतकी यादगारीसे;
सबसे आज़ाद हुवे, दिलकी गिरफ़्तारीसे.
शबे ग़फ़लत मेरी है और, फ़ुक़त खैरो शबाब;
ख़्वाब औरहो सहर, रातकी बेदारीसे;
तुझ तलबमें ये खोया, आपको मैंनेके निशान;
तालिब अपना मैं हुवा, तेरी तलबगारीसे.

मैं परस्ती है मेरी बादेसे आमुरवशे फ़लक;
तौबा सहडो मेनेकी है, मेरी मैख्वारीसे.
शकवह है जैसे नज़ाका, तेरे जिस्म नाज़ुकको;
मुझपे ले गुज़रीसो, मेरीही वफ़ादारीसे.
काने दिल जब तलक हो, तुझसे हमारा हासिल;
काम अपनातो हुवा, अच्छे है बीमारीसे.
पोंहचे गर शोहरे खूबांमें, तुपेर खे सौदा
रहियो आगाह महब्बतकी ख़रीदारीसे.

ग़ज़ले रत्न-३६१

अब शकर बनने लब अपनेसे, सुनादे गाली:
मुझे मीठीलगी खुशहोके, मैं खादे गाली.
क्या हलावतथी तेरी गालीमें, अल्लाह अल्लाह;
कंद मिसरीसे मगरथी, यह बनादे गाली.
छेडकर तेरे तई, आपसे हम खाते हैं;
आशिकोंको तेरी है, खूब मज़ादे गाली.
तुरशरू होके शकर लबने, मुझे देता हय;
परहे रफ्ती ह्य ख़राबेमें, मिठादे गाली.
हे रत्न तेरी ज़बां येहतो, जिपर शीरो शकर;
यह नई तरहकी अब तूने, बनादे गाली.

ग़ज़ले र... सिफ़· ३६२

निगरांउ सुन येह जानिबे ग़ैर, दिल ईरे बपरी रही;
मेरी चश्म मुंदले मुंदते तक तेरी, महव जल्वःगरी रही·
पसे मर्ग जिस्मे निज़ार, आलूदः खूं हो गया सब्ज़ वले;
वही शूर रहा दिले शूरीदः वही, चश्म की न तरी रही·
तुम्हें गुल की जिसने बनाया बू है, मुझसे उसने सबा है तूं;
वहां तुम तो परदे निशीं रहे मुझे, आह दरबदरी रही·
मेरे पास जिससे हुनर तो थी, वले बूदो बाशी थी तेरी यहां;
कुमला गए बेशाख़ हासदा जहां, जिससे बे हुनरी रही·
नहीं होशियारों पे कुछ हसद मुझे रश्क है तो उन्पे दय;
जिन्हे तेरे बख़्ते के सामने, मेरी तरह बे ख़बरी रही·
ये बयाज़ है आख़री आरज़ी कुली होश होकली रई तगी;
न वो गिरय ओ दिले शाद रहा, न वो बेरी ओ सहरी रही·
जिगर और दिल सभी रख्ते थे वले हो सकता न कोई तर ई;
हद उसके ना पड़े खुश्की येह, मेरी ही जिगरी रही.
मुझे सोंप डर गए के ज़िबर वे, हुवे युं जुदा के फ़िर न वे मिले;
मेरे दिल में ता दमे या पसीं यो ह, अमानत उसकी धरी रही·
न थी चश्मे रासिख़े बस्ता दिल कभी जाली अश्कसे. दोस्ता
शबो रोज़ बमपुर आब की रविश, आंसुवों से तरी रही·

गज़लेम ; क्रम: ३६३

जब हसे गुलचमनमें, खिलखिलके ;
क्युं न रुठे हो, ए बुतुं दिलके.
जहरे उल्फतमें डूब ही जावें ;
पर न पोहचान होवें साहिलके.
नासेहा क्युं अबस तु जलता हय ;
हम हैं तालिब फकीरें कामिलके
कुछ तो मनज़िलमें है, तिलस्म दिला ;
होश उडते हैं यहां ए आकिलके.
याके सीनेसे लगाये दिलको ;
कुछ हो बिन्से ना मुश्किलके.
करके जेहाश लगया दिल धोह ;
नूरनेयाले रोफ़से गाफिलके.
याकृतमे पसल करके मुकरे हय ;
ए रोहनशाहकोमें जातिलके.
लेगे कुरकतसे ए बड़ा पेशा ;
फूल तुकडे किये मेरे दिलके.
कत्ल करनेसे ऐहर अय महकुम ;
खुल गये आन लेगे कातिलके.

ગ઼ઝલ ૩૫૪

મેહરસે હમ આશ્નાહ હે, ...મરીરકી સૂરત;
પર ઝુલ્ફકે મહ્વરપે હે, તહરીરકી સૂરત.
જેર હમ હજારોંકો, કિયા ઝુલ્ફને તૂને;
સાબિત ન હુઈ એક ભી, તક્સીરકી સૂરત.
હુસ્ન મૈંને ચમનમેં જો, લબે ગુંચેકો દેખા;
આંખોંકે તલે ફિર ગઈ, તસ્વીરકી સૂરત.
આતા હે જો ઉસ જેડીકે, ...કારકા આલમ;
પર કેદમેં ભી ફિર ગઈ, જંજીરકી સૂરત.
હાસિલ તુઝે ક્યા હે, મેરે સમઝાનેસે;
હમ માનતા હે વોહ બુતે, બેપીરકી સૂરત.
દામાને નસીબે સફરી, મુશ્કે ઝિયાં હય;
શાયદ યેહ ખુલી ઝુલ્ફે ગિરહગીર કી સૂરત.

ગ઼ઝલે નૂર-૩૫૫

જુદા બતાહૂં તેરે, હિજરકે મારે આરે;
મેરે જાની મેરે દિલબર, મેરે પ્યારે આરે.
અરઝ સરપે ચલા તુ, ચલેકિન મેં તો;
શૌકમેં તેરે ઉઠ જાઉંગા, આરે આરે.
મુદ્દતેં હો ચુકી ફિરતે, હુએ અગયારોંકે.
એક દિન રાતકો મેહમાન, હમારે આરે.

चाहे ज़क़ने चाह तेरा, चांदसा, मुखड़ा जे मेहर ;
ऐसा गिनताहूं ईल ऊपर, कु सतारे सारे.
नूर जेता जे है अज़ अज़रके जुदाई से तेरी.
रश्के खुरशीदपे रे माहके पारे सारे.

ग़ज़ले नूर ३६६

जज़्बमें रोने लगे, यारके समझानेसे ;
राज़े दिल छिप न सका, अश्कोंके तरसानेसे.
दिल बेताब रोज़ तलाशमें, क्या क्या उलझा ;
चाह है चाह ज़ुल्फ़के सुलझे, न के भूशानेसे.
हाथ गरदनमें न डालो, न मिलो तुम हो वही ;
नफ़्ज़ा होगये थे ग़ैरोंके जहडानेसे.
चाह तरिज जाये छलाही, कहीं मैख़ानेसे ;
दिल्को शीशेमें मलूं, आंखोंके पैमानेसे.
जो मसीहा तेरे जानेसे, मैं मरजताहूं ;
जान आजाती है तनमें, तेरे आ जानेसे.

ग़ज़ले नज़र ३६७

ताब उठे देखनेकी, न लाये चले गये ;
क्या क्या परी जमाल थे, आये चले गये.
साहब रहा न कोई, पयंबर रहा नहीं ;
कोहली छिपी ज़मीनमें, समाये चले गये.

दारा रहा न जमन, सिकंदरसा बादशाह;
तख़्ते ज़मीं पे सैंकडो, आये चले गये.
आलम था येह ज़ुलेखाका, युसुफ़की चाहमें;
रोरोके हज़ार ज्याहके, आये चले गये.
देखा नज़र मैंने चमनमें जो आपको;
मेंहदी लगेके हाथ छिपाके, चले गये.

ग़ज़ले छत्रीशा. ३६

लखूहाईपे सब्बेज़हर आईल बुलबुला हर हय;
खुमडेका नूरका मुखडा ग़ज़ब, उसकी सजावट हय.
ख़बर लीजे येह किसके पांवकी, अजब आहट हय;
के है ठोकरमें जिसके दिलमें उठती थरथराहट हय.
अब कहताहूं दयानेकी, उनकी खोलदो चुपकी;
नहींतो सर है मेरा आन, और साहबकी चौखट हय.
अरे ज़ालिम येह क्युं आया नहीं, मालूम है मुझको;
जलाके जिसकी दिल लेता पडा, सीनेमें चरचर हय.
जलाके जब मैं लेताहूं तो यूं कहता है वोह ज़ालिम;
तुझे मैं खूब समझाहूं, अरे तू एक निरधर हय.
ढूंढता है जब मख़्मलका तकिया, अपने पेहलुसे;
तो याद आती है किसकी, वोह मज़ेकी मुझको रटपट हय.
कहा मैंने अब कुछ मुंहसे हाय मरताहूं;

તો દુઆ દેતે નહેં યહ સમઝે, ઔર એક સબબ નાયરહ્ય·
જ્યાહે કિસ્તરહ છેડકે, સરાપા છેસતેરે દિલકો;
કે લાખોં ખંજરકી હરએક નોકઝકી લગાયરહ્ય·

ગઝલે આતશ· ૩૭૧

આલ બુતેઇયારકે રૂખસાર તક આને લગે;
ચશ્મએ ખુરશીદમેંભી, સાંપ લેહરાને લગે·
આઈ તાબે હુસ્નકો, મહતાબે બીના દેખકર;
આનએ ખુરશીદમેં હમ, અશ્ક ટપકાને લગે·
દે દિયા સુરમા નરગસકો, ડારવાને શબ્ને આહ;
યૂં બગોલા હમ રહા, બંગલમેં ભરકાને લગે·
ઘીસ્કુલી સબ કતલ કરે હે, તેગે ખૂબ યારકો;
બેઠે બેહરથે નહાં સબ, સાઈ દિખલાને લગે·

ગઝલે મૌલાઈ· ૩૭૨

ચગ સાંકલ
દિલ હુવા પાબેજ લંગર, ખુદા ખૈર કરે;
દામમેં બુલ્બુ ગિરહગીર, ખુદા ખૈર કરે·
કિસકી આમદ હે સબા, આજ ને ગુલ્શનકી તરઈ;
કહતીહે બુલબુલે દિલગીર, ખુદા ખૈર કરે·
સુરખ પોશાક પેહન બૈઠે, હો જો તખ્ત ઊપર;
કિસકે હે કતલકી તદબીર, ખુદા ખૈર કરે·
શબ્બે બિસ્મિલ મુઝે બિસ્તરપે, તડપતે દેખા;

हंसके बोला मेह तन्वीर, खुदा खैर करे·
कजई यांद तेरे आया तो युं कहते हैं रक़ीब;
कुई मौलाईकी तौक़ीर, खुदा खैर करे·

ग़ज़ले ग़रीब· ३६९

किसक़दर मैं जो कहूं, यार बड़ाई तेरी;
अक़्ल हैरां है मेरी, देख सफ़ाई तेरी·
आफ़रीं कहिये मियां तेरे, मुसव्विरके तईं;
जिसने किस खूबीसे तस्वीर, बनाई तेरी·
क्या कहूं किससे कहूं, कौन करेगा आसान;
सख़्त मुश्किल है मेरे हक़में, जुदाई तेरी·
यह जुदाई जो नहां, जीव न होती पैदा;
क्या खुदा खाली ही रहती, यह खुदाई तेरी·
रोज़े महशरको खुदा पूछेगा, सफ़्लीसे मुझे·
तो मैं भी दस्त दिखाउंगा, दोहाई तेरी·
या मोहम्मद तेरा दर छोड, कहां जाये ग़रीब;
बादशाहीसे तो बेहतर है, गदाई तेरी·

ग़ज़ले कैन ३७०

कर दिये बाग़के दरबंद, बाग़बानोंने;
आफ़ेरशी जोश दिये आके, मेहरबानोंने·
ताब आई न मुझे जरके, नज़रसे देखूं;

कर दिया मालपरी ज़ादोंने, इनसानोंने

दिनको है चैन न मुझ, रातको नींद आती हय;

तुझपे गुलशनमें परी, हमसे जो ज़मानोंने.

ताना सब देते हैं अब, भूनी सो ग़मेयार मेरे;

ईज़ क्या पाये मियां, शम्अके परवानोंने.

ग़ज़ले वहशत. ३७३

निगाहे यार हमसे आज, बे तक़सीर फिरती हय;

किसीकी कुछ नहीं चलती है, जब तक़दीर फिरती हय.

कभी तू भी जायेगी उससे, गोरे ग़रीबां तक;

के मुद्दतसे हमारी ख़ाक, दामनगीर फिरती हय.

मैं उस लैलीका दीवाना हूं, गाफ़िल जैसे सहरामें;

जगतमें अपने मजनूंकी लिये, तस्वीर फिरती हय.

पड़ापे ईश्कमें शाहो गदाका, एक रुत्बा हय;

ज़ुलेख़ा हर गली कूचेमें, बे तौक़ीर फिरती हय.

तेरा दीवाना जबसे उठ गया, सहराये वहशतसे;

जगोलेकी तरहपर ढूंढती ज़ंजीर फिरती हय.

ग़ज़ले मूसा. ३७४

चमनमें वोह गुले रअना तराना, जब के गाता हय;

सरासर बुलबुलोंको एक बेरी, वज्द आता हय.

યોહ દુખ્તરે તાક શુન્ગોંમેં ..., જિસ્મકો જલાતા હય;
દિલે હસરત નહીકે બજે યોહ, બેતાબ પાતા હય.
અબસ યોહ બેવફા ક્યું દિલ, શિકસ્તોંકો સતાતા હય;
ઘયર એક બોસેકે ક્યું ગાલિયાં, લાખોં સુનાતા હય.
કુલક તેરી જુદાઈકા મુજે, વહશી બનાતા હય.
ઉઠાતા હય બિઠાતા હય, હંસાતા હય રુલાતા હય.
સહરતક શામસે ફુરકતમેં ગિનતા હૂં મેં સેતારે;
જુદાઈમેં તેરી આજકો ભી, ખ્વાબ આતા હય.
કોઈ બઢકર મસીહાસે કહે, મેરેકે એ જાલિમ;
તેરા બીમાર ઠુકરોંસે હમે, મુરદા બુલાતા હય.
તસલ્લી સી સમાં જતી હે, જબ આંખોંમે મૂસાકી;
યોહ રશ્કે મેહરે તાબાં નજરે બેરીરાન દિખાતા હય.

ગઝલે મૂસા-૩૭૫

સરપે માહી દોડ રકસ કોસન દેજયે;
બાગમેં ઉશાકકે ગુલ રૂએ માતમ દેજયે.
ગોરિસ્તકે હે સાજને, ઓર સાજને હે સાગરે;
જાહ મજાહ ફિર ફાલયેહ, માહીકા સાજન દેજયે.
આરીકીકા શૌક હે લેલાકે, માનિન્દ એ દિલા;
ચાહિયે વહશતમેં જ, મજનૂંકા બન બન દેજયે.
કુજ મોયસર હો સિયા, દૂજેકે એસા જુસ્તાં;

ખ઼ૂતો સ઼ફહા હૈ જહાંમેં, પર મુઝે દેખિયે·
ખ઼ૂન રોયોંસે તુલા લડ઼ે, નાલોંસે મિલા;
પાર મૂસા હોગયા યેહ ઇશ્ક઼કા બચપન દેખિયે·

ગ઼ઝલ ૩૭૬

ક઼ાસિદ લાઈ ખ઼બર, યારકે આનેકી;
જાન આતી હૈ ચલી, હિજ્રમેં દીવાનેકી·
આપ આયે ન કભી ખ઼લ્વ઼ત, ઇતાબત લેને;
સૈંકડો રાહ દિખાયે, મુઝે તરસાનેકી·
ચશ્મ ગિરયાં હૈ સદા, સીના ભી બિરયાં હૈ મુદામ;
આરઝૂ જીમેં હૈ બસ, જીસે ગુઝર જાનેકી·
તુ મિલે ગ઼ૈરોંસે, મૈં આંખોંસે અપને દેખૂં;
હ઼ઈસ઼દ હૈ ઇસે બસ જાને હૈ, મર જાનેકી·
ઐ સબા બહરે ખ઼ુદા કુછ, મુઝે તદબીર બતા;
યા ઉસે લાકે મિલાયા, મુઝે લે જાનેકી·
ગિરયહ જારીપે મેરે, રહમ નહીં આનેકા;
કબ તલક ચશ્મ મેરી, ખૂન હૈ બરસાનેકી·

ગ઼ઝલેમ હ઼કુમ ૩૭૭

તેરે દરપે હમ આકે પડે હૈં સ઼નમ મનસ઼ૂરકે રહ઼નવત઼નકે
તેરે હિજ્રમેં જાનિયે બુસ્તાં સિતમ઼ન ઙુબર ડેરેહ઼નડૂનેકો કુઝે;
તેરી ઉલ્ફ઼તે સરહદસે મૈં દિલ્બર ગિરયસ્પડી રાહ ફ઼સલ ફ્તે નિગર

रहे रोते सदा जाहीद रजे न मुख़्तार रहे रहे न बलन के हुए·
नेक पैग़ाम दिलके वोह हो न सके, ग़म पे फ़िक्र लुत्फ़ार के जो- नसके;
न हुए सै हैं वो हली हाल हमारे कम न ज़ग़र के रहे न दहन के हुए·
चला घर से निकलके जै सैरे चमन हुआ शाद यो सुनके यह अपना सुख़न;
नहीं इसके पर किसी तरह से हम, नशा न रहे रहे न चमन के हुए·
हमे सुब्ह न आया है जा हद जन नशा या हम आया है अपने लेस न म कोआ...;
हुए फ़िक्र में रो रो के हम जे दम, न फ़ज़र के रहे न सुफ़ज़न के हुए

ग़ज़ले नसीरे देहलवी· ३७९

दिल कहीं मेरा गिरफ़्तार हुआ, चाहता हय;
फिर मुझे इश्क़ का आज़ार हुआ, चाहता हय·
वोहतो परदेसे निकलता नहीं, जाहिर अय दिल;
निकला तू तालबे दीदार हुआ, चाहता हय·
देखलेने दे मुझे औरती, यारो उसको;
चश्म अब रोज़ने दीवार हुआ चाहता हय·
नाले करता है कड़ा पर कड़ी, ख़ुदा ख़ैर करे;
यारो हमपर सितमे यार हुआ, चाहता हय·
रोज़ गुल खाता हूँ कुदूरत से तेरी, सीने पर;
सीना अब तख़्ते गुलज़ार हुआ, चाहता है·
रात सब वस्ल की ज़िन्दगी में कटी, हाय नसीर;
दिन जुदाई का नमूदार हुआ, चाहता हय·

ग़ज़ले मफ़हुम ३७९

નસીબ સુતેલો

बख़्ते ख़ाबीदहसे बेदार हुआ चाहता हय;
मेहरबां हमपे सितमगार हुआ चाहता हय.
राह उल्फ़तमें दिला कोई न कर तु हरगिज़;
पेशवा हैदरे कर्रार हुआ चाहता हय.
तुंद चलती है हवा आज दिला आहोंकी;
फुके यह अब्रे गोहरबार हुआ चाहता हय.
निशा आलूदह तेरी देखके, आंखें सारी;
मोहतसिब आपही सरसार हुआ चाहता हय.
दिन क़ियामतके क़रीब आये हैं कुछ गौर करो;
चाक यह गुंबदे दव्वार हुआ चाहता हय.
अश्क बिन आह दिला, तू न बहाया कीज्यो;
तुहीं क्या ख़ून अमलदार हुआ चाहता हय.
है यहभी बेख़ुदी हालत तने लागी मफ़हुम;
फ़िकरके बोझसे ख़मदार हुआ चाहता हय.

ग़ज़ले मुरव्वत ३८०

दरदो ग़मे फ़िरक़ने मारा मुझे;
अब नहीं दमलेनेका यारा मुझे.
बात मैं किससे करूं अय मेहरबां;
ध्यान तो रहता है तुम्हारा मुझे.

छूटगया हिज्रनयोंह, पायी है यार ;
जहरे महब्बतका कनारां मुझे .
योंक पडा सुन्तेही आयाबेपा ;
मैं यही समझाके पुकारा मुझे .
हिज्रकीरात हेजये अब क्या दिखाखे ;
दिनतो गया रोतेही सारा मुझे .
उदू नकश नामका खुरसत कुं मैं ;
थीरे अगर छिन्का आरा मुझे .

ग़ज़ले अहमद ७-१

ग़म्ज़ओ चश्मसे मारा मुझे ;
करदिया वल्लाह दोपारा मुझे .
खुल्यो सितम उसका सहूं कब तलक ;
अब नहीं ग़म खानेका यारा मुझे .
हिज़्रमें उस यारके मरता हुं मैं ;
कुछ नहीं अब जीनेका यारा मुझे .
अब तलक उस बुते ऐ यारने
मीठी ज़बांसे न पुकारा मुझे .
देवे यह दिल किसको, अब अहमद भला ;
दोनो जहांसे है तु प्यारा मुझे .

गज़ले मूसा ३८२

जैसी अजब है हमें मुश्किल, कभू ऐसी तो नथी;
जैकी मुश्किली भी ये दिल, कभू ऐसी तो नथी.
आजकल यारके जो होत आपके, होते हैं ज़िलाई;
जात पेहले तेरी जाहिल, कभू ऐसी तो नथी.
क़त्ल आशिकोंको किया, करते हो अजब ये तक़सीर;
तेरो अजब तेरी क़ातिल, कभू ऐसी तो नथी.
यारके करते ही गुलशानमें, नज़ारा अजतो;
आंख नरगिसके मुक़ाबिल, कभू ऐसी तो नथी.
पड गया अक्स मेरे चेहरे, खुरशीदका अज;
रोशनी माहको हासिल, कभू ऐसी तो नथी.
ख़ंजरे नाज़के मजरूह, येह क्या करते हैं शोर;
तेरी शमशीरकी क़ातिल, कभू ऐसी तो नथी.
अजतो हरजातमें मूसासे, ख़फ़ा होते हो;
जो तेरी ख़ैर शमायेल, कभू ऐसीतो नथी.

गज़ले मूसा ३८३

जैकी जागमें माली, कभू ऐसी तो नथी;
जाली हर फूलसे डाली, कभू ऐसी तो नथी.
कहको शरम है, गुलज़ारकी आगे तेरे;
मुंहमें शीरीं तेरे गाली, कभू ऐसीतो नथी.

જેમેં હર નક્શમેં, મેહરાબકી સૂરત હૈ અયાં ;
તેરી શમશીરે હિલાલી, કહૂં એસી તો નથી·
બાત કરને નહીં દેતા હૈ, કિસી શાએરકો ;
તબ્અ ઉસ શૂખકી આલી, કહૂં એસી તો નથી·
ખૂન કિસકા કિયા તૂને, સિતમ ઈજાદ બતા ;
કે તેરે ચહેરેપે લાલી, કહૂં એસી તો નથી·
સુનતે હૈ સાકિયેમય ઇશ્કા પિયાલા નિકલા ;
બોતલ ઈસ બઝમમેં ખાલી, કહૂં એસી તો નથી·
ખૂન મૂસાકો દિયે કહબને, દુન્યાને ફરેબ ;
ઉસકો યહ ચાહને વાલી, કહુ એસી તો નથી·

ગઝલે મૂસા ૩૮૪

ફિદા હૂં મેં તુઝપર, યહી આરઝૂ હય ;
જો કુછ આરઝૂ હૈ, વોહી ગુફ્તગૂ હય·
સનમસે મુઝે બસ યહી, ગુફ્તગૂ હય ;
મેરે પાસ તૂ હૈ મુઝે, જુસ્તજૂ હય·
ન જન્નતકી ખાહિશ, ન દોઝખકી પરવા ;
ફકત હુકમ તેરા, મેરી આરઝૂ હય·
ઝબાંકો ન તાકત, કલમકો ન કુદરત ;
કહું ક્યા લિખું ક્યા, જો હૈ તૂહી તુ હય·
નકર એબ ગરમેસે, મજબૂર હૂં મેં ;

के फ़ुझमे ख़ुशहाली कुछ भी, य शौरबू हय.
कु मअमूर नमें महब्बतमें साक़ी;
न ख़ाहिश है मैकी, न शौक़े सबू हय.
तु कर शुकर मूसाके फ़रमाने मौला;
अब हज्ज कुमने अमती, फ़िरी कुरु हय;

ग़ज़ले ख़लीक़ ७८५

तीर निगाहे यारने, मारा मुझे;
अबतो नहीं कोई चारा मुझे.
उम्रमें अपनी कभू, ऐ मेहरबां;
चाहके एक दिन न पुकारा मुझे.
हमसे ख़फ़ा ग़ैरसे हो हम कलाम;
ख़ुश नहीं ऐसा गवारा मुझे.
ज़हरे अलममें तेरे कहांतक रहूं;
पार लगा अबतो ख़ुदारा मुझे.
किससे कहूं हाले दिल अपना ख़लीक़;
तुझ सिवा अब कौन है प्यारा मुझे.

ग़ज़ले फ़िराक़ ७८६

चमने हुस्ने रअना से सदा आती हय;
नाज़ करती हुई अब जाहे, सज़ा आती हय.
कौन लरता है दमे सरहदमें, रातोंको मुदाम;

ठंडी ठंडी तेरे कूचेकी, हवा आती हय.
किसके मैं दस्ते हिनाईका हूं नफ़्सी यारब;
बू हर एक नफ़्ससे फिर, मुझे हिना आती हय.
ख़िल्वते यारकी रख्ता है, सरे शामसे दिल;
रात क्या आती है एक, सरपे बला आती हय.
छोड़ जाता है जो वोह, मुझको अकेला घरमें;
दरो दीवारसे रोनेकी, सदा आती हय.
कूरासे ताज कमर, और कमरसे तापा;
जोंही जल्वाये हुए जुल्फ़े, बला आती हय.
जबमें आता है मसीहासे, मैं पूछूं जाके;
मरने घ़िस्कीकी तुमको, दवा आती हय.
सुब्ह किस्तरहसे होगी शबे तारीके फ़िराक़;
न तो नींद आती है मुझको, न कज़ा आती हय.

ग़ज़ले नासिख़ ३८७

याद दामन किसे जाना, तेरे दीवानोंने;
कूदजाने किसे आबाद, परेशानोंने.
निमबिस्मिलयेह तडफ़ते मुझे देख आ कातिल;
शोर आलममें किया है, तेरे जब्नोंने.
जब्से उस ज़ुल्फ़के मुश्कीसे, शबे तारमें आ;

दिल दिये जुल्फ़े परेशांके परेशानोंने.

हूर छैल आंखके पुतलोंका नहीं क्युंके भला;

ढूंढा है आलममें आलामें भी इनसानोंने.

मेरे दिलदारपे दिलजर शबे मेअराजकी रात;

गशी किये हूरों परी कुदसियो गिल्मानोंने.

गज़ले सौदा-३८

साके सीमींकी तेरी देखके गोरी गोरी;

शरमसे शम्अ हुई जलती है थोडी थोडी.

नय शकरने कही तुझ लबसे कियाथा दावा;

अजतलक उसकी जुदा करते हैं पोरी पोरी.

आ गया रातमें जूं दुज़्द हिना तेरे हाथ;

धरनज पांवकी जाताही था चोरी चोरी.

अब्र जरसे है सियह, मस्तलला ये साकी;

दे तुं भरभरके मुझे पीआलियां कोरी कोरी.

गज़ल-३९

मरते हम गो जे पड़ा देखा तुझे;

एक नज़र देखा तो क्या देखा तुझे.

ऐ परी तूमें छिपाला क्युं न हूं;

जान जोसे जारहा देखा तुझे.

गिरयने जुल्जुल्पे उसने हंस दिया;

निस्बते ऐ गुलगूं क़बा देखा देखा तुझे.
पाके ग़ैरतके न निकले आईताब;
बामपर चढ़ते सनम देखा तुझे.
दीदमें हरचंद है, नुक़साने अमन;
फ़ायदा इतना हुआ देखा तुझे.
मुझे गुलशनकी न लाई ता क़फ़स;
बस हवा हो ऐ सबा देखा तुझे.

ग़ज़ले हकीम. ३८०

ख़फ़ा हमसे वोह सिमबर, होगया हय;
तो खूं ग़मसे दिल और, जिगर होगया हय.
मिले हैं अब कड़ कड़के, वोह मुझसे शायद;
मेरी आहका कुछ असर, होगया हय.
करे है अब बुलबुले, गुलज़ार ऐसा;
जिगरसे कहीं बेख़बर, होगया हय.
नरहले ख़बर, ओ मसीहाके तेरा;
मरीज़ अब चराग़े, सहर होगया हय.
कहे कौन तेरा पयाम, आतशीसे;
हकीम उस्से सबके ख़तर होगया हय.

ग़ज़ले अशरत. ३८१

बेकली ऐसी गया है सोंप, वोह गुलरू मुझे;

कल नहीं पडती किसी करवट, किसी पेहलू मुझे·
बज़्म में क्यों शमशीरकश साहिब्ने सगरूमता है आह;
याद आ जाती है जब वोह, ख़मिरी अबरू मुझे·
नातवां हूं अबके फ़ुरक़तसे, तेरे ख़ुबरगे काह;
अब सजा दूर है उस पेहलूसे, इस पेहलू मुझे·
रोते रोते मैं हूं हैरां, येह मुझे क्या होगया;
कुछ नज़र आता नहीं, आंखोंमें क्यों आंसू मुझे·
जब तलक देखूं न तेरी शक्ल, कल पडती नहीं;
सब जला तूने किया है, यार क्या जादू मुझे·
जातमें मेरीतो अबतक, दरद कुछ आया नहीं;
क्युं किया चाहता है रुसवा, यार अब हरसू मुझे·
क्या कहूं कुरबत में उस, सैयाद कातिलकफ़िलक;
दामसे छोडाता छोडा, तोडके बाज़ू मुझे·

ग़ज़ले दरद· ७५२

अय फ़लक मेरे मोतियोंका, हार न टूटे;
सब अश्क मुसलसल रहें, और तार न टूटे·
हम पासे अरहना चले, सेहराके निकलकर;
हर चोब पुकारीके, मेरा ख़ार न टूटे·
सैयादसे बुलबुलने कहा, रोके कफ़समें;
मैं मूंठ जलासे पयेह, गुलज़ार न टूटे·

उस रात सुराहीने भी, पैमानेमें हिचकी ;
डरने लगी प्यालेसे कि, ख़ुम्मार न टूटे ·
दिल दरदकी बातें न करो, हमसे ती बनी ;
यह रिश्तये नाज़ुक है, मियां तार न टूटे ·

ग़ज़ले बेदु-३९३

सर जयक़ते बज्ह उसक़ातिलके, बेरपाये हय ;
यह नसीब अल्लाहो अकबर, लोटनेकी जाये हय ·
रेफ़्सत जे कहां जुनूं बज़्रे, दरबन्दहाजे हय ;
मुज़ दह् जारे दस्त दिर, तलया मेरा जुनलाजे हय ·
हांमदद ताक़त गई है दिल, इसे सीनेमे दम ;
देजये उसतक ख़ुदा अथुंकर, मुझे पोंहयाजे हय ·
चाह्यारीरे महब्बत, ख़ुजही छड़डा नमड ;
उस्तुआं मेरा हुमा किस किस मज़ेसे खाजे हय ·
न बज़्ममेंभी बेदको तेराही है जसधेन्ते बज़र ;
बनिजे दरदेजले है बजके होरा आबजे हय ·

ग़ज़ले छेनशा-३९४

क़सम न खाइयो आलिम, मैके पीनेसे ;
बगार न होंगे हम आज़ुरदह, अपने जीनेसे ·
अगर मैं पाउं अकेला, कही तुझे है हय ;
तो किस मज़ेसे लगालूं, मैं अपने सीनेसे ·

चमकते चांदके हैं गिर्द, जिसतरह तारे;
झलझल है तेरे मुखडेपर पसीनेसे.
वोह सुनके अरज़को घनशामकी, इसतरह बोला;
किसे ग़रज़ है अबस, मुंह लगे कमीनेसे.

गज़ले अली ९५

हम दिलसे हुऐ अहमदे मुख्तारके बन्दे ; (गुलाम)
लेते हैं सिकंदरके सबब, इक़बालकी नज़रे.
ताऱीफ़ लिखी क्या करुं, उसनूरे खुदाकी;
युसुफ़से कई उसके हैं, दरगाहमें बन्दे.
आयाहुं तेरे दरपे, ऐ महबूब खुदाके ;
मुश्कल मेरी हल करदे, खुदा आपही करदे.
तुशाहे उम्मत है, मैं हूं आसी जहांमे;
उम्मीद तेरेसे ही है, हरबार यह करदे.
हम दिलसे हैं मुश्ताक़, तेरे ख़त्मे रिसालत;
परवा नहीं जन्नतकी है, ज़ाहिदको ख़बरदे. (तपस्वी)
है कौन सिवा तेरे, शफ़ाअतसे जहांको;
आलमके पते अमां, रोज़े हशरदे ;
बस ईद तेरा नाम है, ऐ साक़िये कौसर;
ऐक जाम महब्बतका, तेरे आसीको भरदे.
चहता है मगर अईसरे, इकजाम अली तू;

सर अपना महब्बतसे, उसी ख़ाकपे धरदे;

ग़ज़ले मुग़्नुद्दीन ३८६

राज़ी हैं हम उसीमें, जो कुछ दिल रुबा करे;
चाहे नवाज़ो मेहर करे, या जफ़ा करे.
दिलसा रफ़ीक़ जिसका जुदा, होगया हो यार;
वोह अपनी बेकसीको, न रोवेतो क्या करे.
जिसने हमारे दोस्तको, हमसे जुदा किया;
वोहभी मुराद अपनी, न पावे ख़ुदा करे.
कहता मुग़्नुद्दीन है तुझे मेरे दोस्तां;
आसां सभोंकी मुश्किलें, मुश्किल कुशा करे.

ग़ज़ल ३८७

दीवाना किया अज़मपें, शोख़ अदाके किसीने;
बेहोश किया चेहरेको, दिखलाके किसीने.
देखा जो मैने दस्त, कलाई निकल आई;
दी गालियां लाखों मुझे, झुंझलाके किसीने.
कुछ दस्त दराज़ी किया क़स्दसे मैने;
झटकादे मेरे हाथको, शरमाके किसीने.
रख हाथ मेरे सीनेपे, गुलदस्त ऐ नरगिस;
मारा मुझे दीदारसे, तरसाके किसीने.
समझा मुझे दीवानासा, उस शख़्सने बेज़ार;

दिल छिन लिया मुद्दतमें, जेहलाके किसीने·

ग़ज़ल· ७८८

मैं पोह नहींहूं के तुझ जुतसे, दिल मेरा फिर जाय;
फिरूं मैं तुझसे तो मुझसे, मेरा ख़ुदा फिर जाय·
यक़ीन है के कयरको पोह, दिल केजा फिर जाय;
मिसालेक़ी जलह नुमा, दिल मेरा यहीं फिर जाय·
छिसा ही पोह न फिरे, जिसके ग़ममें मरता हूं;
जलासे हल्के पे गो खंजरे, नक्षा फिर जाय·
फिरे ज़माना फिरे आसमां, हवा फिर जाय;
ख़ुतोंसे हम ना फिरें, हमसे गर ख़ुदा फिर जाय·
जिगर दिये जो आलोंको, अपने मुखडे पर;
तो क्या अजब है के आघे कुछे, घरा फिर जाय·

ग़ज़ले ससीमी· ७८९

तुम्हारी ज़ुल्फोंको जे यार, जम अलीसे हय;
नरहसी उम्मे तरने, सितम जलीसे हय·
फिराके यारके क्युंकर, उठायेगा सदमें;
मेरा तो जेफ्ड्से, आंखोंमें दम अलीसे हय·
मन नहींके पस जल, मरग ग़मसे दरगुज़र;
खुलोंके छिस्कीकी हमदम, कसम अलीसे हय·
सनमके जमे महफलमें, देखिये क्या हो;

के शाइल उसकीमें आसारे ग़म, अलीसे हय.
योह शूफ़ जनिबे सेहरासे ली, गयाही नहीं;
के दस्त गैरसे आगो छरम, अलीसे हय.
अली तो घेरसे लरके, पड़ा कुयाही नहीं;
के अद रखीजपे सुक़ो करम, अलीसे हय.
क़िहा है तुमने सलीमीतो, जनो दिलसे सनम;
पर उसके सीनेपे दरघो अलम, अलीसे हय.

ग़ज़ल. ४००

मुझको वोह नज़ल दिखाता हय;
मेरा युसुई कुंएं अंडाता हय.
दिख्ये किसकी ख्यास बुझती हय;
फ़ंजरे आबदार लाता हय.
साथ पीना शराब सेलीके;
साक़िया मुझको याद आता हय.
तुरशरे होके मुंह फिराता हय;
ज़हरे क़ातिल मुझे पिलाता हय.
शबको वोह माहरू नहाता हय;
चांद गैरतसे डूबजाता हय.
दिल मेरा है मिसाल शीशेके;

ઇસ્લિએ આંખમેં મિલાતા હય.
શખ્સ મહફિલકા મુઝકો સમઝા હય;
શાયદ ઇસવાસ્તે જલાતા હય.
દીદ આશકકી ચશ્મ નહીં રખતે;
લનતરાની ઇસે સુનાતા હય.
નહીં મિલતે તો ખુશ રહો પ્યારે;
બંદહલી તુમસે હાથ ઉઠાતા હય.

ગઝલે સોહા. ૪૦૧

તીમનં હૈ યેહ તેરે ચશ્મકે, બીમાર કઈ;
પરગમે ખંજરે મિઝગાંકે, દિલ અફગાર કઈ.
કોઈ સસકતા હય પડા, ઔર હૈ કોઈ બેહિસ;
જાન દેને તેરે કૂચેકે, ગિરફતાર કઈ.
ઇશ્કહી શર્તહૈ ક્યા, મરજુલ મૌત મુઝે;
યા રબ ઇનસાનકે મરનેકો, હૈ આઝાર કઈ.
રીફ મુઝકો ન ડરા, અપની બડી પગડીસે.
ઐસે મૈં દેખ ચુકા, ગુંબદે દસ્તાર કઈ.
તેરે બાઝારમેં અબ ક્યુંકે, ન બિગડે સોહા;
એક યૂસુફ નઝર આતા હૈ, ખરીદાર કઈ.

ગઝલે હુસૈની ૪૦૨

શહરપિંદહ ઉપરહૈ, તેરી તસ્વીરકે આગે;

सुंबुल है खिजल जुल्फ़की, अंबरके आगे·
आशिक़का तो कुछ बस नहीं, माअ़शूक़के आगे ;
रांझेका तो कुछ बस न चला, हीरके आगे·
जुल्लादके हमें तेग़े, निगहसे है किया क़त्ल ;
बनाही न था क़ादिर, जे पीरके आगे·
इस दर्दकी दारू नहीं, बिन सब्र हुसैनी ;
तदबीरका कुछ बस नहीं, तक़दीरके आगे·

ग़ज़ले ज़िया· ४०३

कहीं मैं शोलारू, बया न कीजे ;
जिगरमें आग लड़काया न कीजे·
मैं कुश्ता तेग़े अबरूका हूं साहिब ;
मुझे तलवार दिखलाया न कीजे·
यह क़ादिर रहज़नी करती हैं आंखें ;
इशारा उनको फ़रमाया न कीजे·
खिलायेगा कोई अफ़सूंका बीड़ा ;
लिया कीजे चले आया न कीजे·
ज़काते हुस्न जो सादो ज़ियाको ;
किसी सायलको झड़काया न कीजे·

ग़ज़ले मूसा· ४०४

दिलसे आशिक़ हम हुए हैं, उस सितम ईजादके ;

जिस्पे सौदा दिलहैं, लाखों आशिक़ नाशादके ·
ज़र्फ़से हर गिरयह ख़ंदह, क़ौलहै उस्तादका;
क्युं न हम क़ुर्बां हों, अपनी साअ़ते मीलादके ·
जामपर नख़्वह दिखाकर, करदिया बेहोश हाय;
किस्तरह आबाद होते, न लाखों फ़रयादके ·
चश्मे बीना देख उस्को, या ऐना बीना हुए;
हमसे या रब अफ़्ल बेहतर, दौरे मादरज़ादके ·
फ़िक्रो ख़ाहिश और तमन्ना, है कमाले फ़क़्र की;
दिलसे हम हैं कुश्तए अंदाज़, आदमज़ादके ·
सोने दिलके गरमी बैयूं, नालए आतश फ़िशां;
मोम होजाये अभी दौरन, कूस फ़ौलादके ·
क्युं न मूसा नख़्वहगर हो, नख़्वए ऐसी निशात;
यह यह करती है बुलबुल, गुल्शने जल्लादके ·

ग़ज़ले मूसा. ४०५

ऐ ख़ालम देख तुझको दंग हूं ;
हुस्न तेरा नख़्वए नैरंग हूं
ऐक जल है नख़्वए, नाले नियाज़ ;
हुस्नमे और इश्क़में जज़ नंग हूं ·
है मेरी जामको शोरे परहुजा ;

हुज्जत तहरीरे ज़ुदा आहंग हय·
क्या असर है आह आतरी जारका ;
रातका अज दिनने जहलारंग हय·
रे जरू उसयारकी तस्वीरके ;
साईईका सामने जस, नकुशाके अरअंग हय·
गर नहीं है तंग उसका कुई यह ;
पर तरहुँ हमें दिल अपना तंग हय·
बल्कह गर आंखोंमें मूसाके सुदाय ;
बल्कह आरा आलमें नैरंग हय·

ग़ज़ले अली· ४०

बिजरीले अमी बिस्की, सदा खाके कुदमले ;
करताथा अबजकोहले, असर अररीपे दमले·
नाम उसका लिखा हुईने, पिला नामसे अपने ;
नोह पायसे अईलाईपे, घेँबतका कुसमले·
किसशानसे बयेगी, मोहम्मदकी सयारी ;
अरसालसे बन्नामें सत्ती, कौबे उपमले·
क़िदवीके तेरे आलरी, दोबखसे नडर हय ;
गर किस्मरे हस्तीसे गया, राह अदमले·
साबित किया मोम्जबने, तेरे कैबका दाक्या ;
घिनकारपे कुईारके, घेकरार सबमले·

हमसर न तेरे हुस्नके है, युसुफ़े किनआं;
जेसा है जिसे मिस्रमें, मालिकने दिरमसे.
आती है अजब बूने, मलक अ़रशे बरींसे;
बस तो हुए ख़यालात सदा, सूए हरमसे.
ऐ साक़िये कौसर है तेरा, फ़ैज़ अजब आम;
मैं अपनी मुहब्बतकी, पिलादेमें करमसे.
मक़बूले ख़ुदा और न, मोहम्मदके सिवा हय;
छिनजातकी अब मुझसे, ख़ुदाकी क़समसे.
करते हैं मलक फ़ख़्र सदा, अपने परो बाल;
जिस राहमें चलती है, तेरी फ़ौज अलमसे.
महफ़ूज़ मन रेहनअये, हर फ़ौजे नजीसे;
क्या फ़िक्रमें बैठा है अ़ली, गोरीबे ग़मसे.

ग़ज़ले मूसा-४०७

गुल गये गुलशनसे बाक़िन, ख़ार बाक़ी रेह गये;
गुम फ़ज़्ल होगये, परमार बाक़ी रेह गये.
दौर आख़िर है दिला, हुश्यार रेहना चाहिये;
चाह दिलसे हक़ हुए, गोयार बाक़ी रेह गये.
दौड़ते हैं छिनदिनो डाग़के घोडे चारसू;
मालशाहोंका हुए अग़्यार, बाक़ी रेह गये.

तीरे नज़्ज़ारेसे दिल अुश्शाक़मे नंजूर हुये ;
ज़ख्म अछे होगअे खूंख़ार जाड़ी रेहगअे ·
दरदो सोदा लेअुे उलफ़ा मीरो मिरज़ा ओर नज़र ;
सजगअे मूसा यले अश्आर जाड़ी रेहगअे ·

गज़लोपूरी

मुस्तज़ादे हुसैन · १

सोता है गले लगके यार, जब यार पलंगपर ;
क्या नाज़ो अदासे ·
आती है लपट फुलोंकी मेहकार पलंगपर ;
उश्शाके इजासे ·
हे सुरख़ जो पोशाक तो, उस गोरे बदनपर ;
सजती है सजयर ·
रखता है अजब तरहका, गुलज़ार पलंगपर ;
अंचलकी निशासे ·
साक़ी तेरे सदक़े तुजरा जमको तरहे ;
जो शौके फुदा हो ·
जो साथि रहूं यारके सरशार पलंगपर ;
सरमस्ते निशासे ·

है आरज़ू दिलकी यों हमे, आगोशमें आवे ;
ज़ाहिर है मेरी यह.
खोलू तो होलउ मैं, जलहार पलंगपर ;
मिन्नत यह खुदासे.
रंगीनी तेरे शेअरकी, सुनसुनके हुसैनी;
अब मुश्ताक हुआ दिल;
तू पूरी रहे और पास रहो, दिलदार पलंगपर ;
हर रोज़ रज़ासे.

मुस्तज़ादे अकबर.२

इस इश्क़ने यारोमुझे, दुन्यासे उठाया ;
दीवाना बनाके.
जुल्फ़ोंमे परीरूके गिरफ़्तार फिराया ;
फिरशाना बनाके.
फिर शौक़के शीशोंमे शराब इश्क़ अपनी,
भरभरके पिलाया.
फिर मेरा तमाशा सारे आलमको दिखाया,
मस्ताना बनाके.
यह कुफ़्तरे रज़ लगती है, हरबेअके मुंहसे;
अईसोसमे साकी.

ક્યા નામ રખા તેરા યેહ, ક્યા તૂને પિલાયા
મૈખાના બનાકે.
બેદિલ કિયા દિલબરને, અબસ લેકે મેરા દિલ;
કિસમ કરો હુનરસે.
ફિર અપને લગા કાનકે, બાલેમેં ઝુકાયા;
દુરદાના બનાકે.
નઝદીક રકીબોંકે સનમ રાતકો બેઠા;
મજલિસ કિયા રોશન.
ફિર અપને શમ્અકે ઉપર હમકો જલાયા;
પરવાના બનાકે.
ગૈરોંકો બુલાકર વોહ, લગા પાસ બિઠાને,
મુદ્દતકે ગોયા દોસ્ત.
હમ દોસ્તસે બેગાનાકે, તબ્ દૂર બિઠાયા,
બેગાના બનાકે.
અકબરકી યહી અર્ઝ હૈ અબ હકસે શામોશબ
અપના તૂ તાલેબ.
દુન્યામેં અગર રખના હોતો રખસે ખુદાયા,
મરદાના બનાકે.

मुस्तज़ाद मौअज़्ज़न ३

मैंने जब तक तो तेरा इश्क़ निबाहा आहा,
जाके सो तरह का ग़म
पले अफ़सोस तूने मुझे न चाहा आहा
जानिये जुल्मो सितम
फुर जुहर शब को ये कायेक मैं कहूं क्या तुझसे,
तेरे बिन गुज़रा जो कुछ
दिले पुर दर्द ये ह पेहलूमें कराहा आहा,
याद कर तुझको सनम
कायरिस जायके तुम कैस रेहहो पीतम,
आप कीरपा करो जी
जतौहे जन मेरी मिन्तीकर आहा आहा,
पाप होजाये धरम
सानू घायल कित्ती तक़सीर कीथी तेंडी,
मेंडी तो जन सेंडी
छिंदरी जांदां तेरी तिरछी निगाहा आहा,
कुछ नहीं तीरसे कम
ऐसी कायथूक आली सांगजिरा मन पासन,
प्यू तुला अन्नायी आन
जनो पनघोगा दिल्ले हार आहा आहा,

यानपर छेतडा जुलम·
भरदी भरदी भेर जुदी भेर तुंछे,
पीये दिछे हाजिल दिछे·
पीयह माफ्शूड पाशा यिस्तह अघाहा आहा,
कुछ नही जेशो नडम·
ज्युरी ज्युरी येरी हॅन्ड सम निरलू येर हियर,
ठिसगिय माछे डियर·
ॲन्डगो जेनी येर युइारा आहाहा अहा
माछे हीस जेपरीडे डम·
वकुले मस्ती योउशीहिम तुरा दरजरे प्रेशा,
हमयो उम्मीदे विसाल·
दीदह अमअनतो सनम यंद अहाहा आहा·
कुस्तखे नाले तोअम·
सरइ तुल उम्र ड्रिले हिनर लेडाया सनमी,
सुम्मा जिल्लाहे इमन·
इआहा सुम्मा आहा सुम्मा आहाहा आहा,
सैसाइ्री मिरले सनम-
हेइ सहहेइ हे अइसोस सह अइसोस सनंम,
आया पयगामे अनल·
छुरगया नफ्मे जगरसे पेरे इाहा आहा,

अब निकल आवेगा दम.

है पोशनब़ तेरे सअशेअमे मुसल्सल मोलूं,

रोकु नहीं छस्मे ज़रा.

येह ग़ज़ल जिसने सुनी उसने सराहा आहा,

लाजह लरताजार हुम.

रेख्तो छैलशानो १

चुलती है येह तो निगोडी मुझे प्यारी अंगया;

कोई साडीसी मेरे वास्ते प्यारी अंगया.

गोखडू लहर जुनत डांई सलारे कुया चीज़;

उससे होजती है कमबख्त गंवारी अंगया.

जीजी मुगलानी ने सीसाछेथी आछे न पसंद;

जेगमालाने योह सर उनके से मारी अंगया.

ढींगा मस्ती अब आज किससे कुछ येह तो कहो;

ईरगछे आपडी साडीकी सारी अंगया.

थी अजब कोई सुघड जिसने येह काडी जूरी;

पाछडी जलाछे अेक हूलोंकी कियारी अंगया.

हाथ छैलशाका कहीं छू जो गया तो बोली;

तेरा मकदूरके तू छेडे हमारी अंगया.

रेफ्तोरंगीननो:२

मैंपोहतो ओढ़नेकी नहीं फुलकी ओढ़नी ;
माळ मुझे मंगादे झला झलकी ओढ़नी·
बरसात जिसको केहतेहैं ओ ओस बहारमें ;
सरपर हुवाके होतीहै बादलकी ओढ़नी·
गरमीकेमारे नाकमें आगहै मेरी जान ;
लेक करके पियारीमें अंचलकी ओढ़नी·
आग लपक कमरमें मेरे लागा धोड्यो ;
घुरने लालकता सरसे मेरे हलकी ओढ़नी·
लाखी निपर मंगादे के **रंगी** लगाउं मैं
ने ठहरतीहै सरपे मेरे हलकी ओढ़नी·

बेत यईानी:१

दिल पछतायगा ओ बुत मेरे तरसानेसे ;
उठके काफ़लेको यसा जावेगा बुतखानेसे·

मजमउल अशआरनो
त्रीजोयालमपूरो·

આમનામ ઉલ અશીઆરના ત્રીજા વાલમની કિતાબ ઘણી સારી રીતે સુધારીને લખીછે તોપણ કોઈ ઠેકાણે કાંઈ ચૂક રહેલી નજર આવે તો તે શાણાં વાંચનારાઓ સુધારી વાંચીને માફ કરશે એવી આશાછે. લા૦ મેહતાજી ચુનીલાલ મંછારામની દુવાસલામ વાંચજોજી. આજની મીતી સંવત ૧૯૩૯ના ફાગણ સુદ ૨ ને વાર સોમે તારીખ ૨૦મી ફેબ્રુવારી સન ૧૮૮૩

આમનામ ઉલ અશીઆરનાં વાલમ-૧-૨-૩ તથા ઘણી જાતના મુસલમાની કિસ્સા ગુજરાતી હરફમાં સુધારીને લખાએલા શ્રીમુંબઈ મધ્યે બાહારકોટ ભીંડી બજારમધ્યે નવાબની મસીદ સામે મુલ્લાં નૂરદીન બિન જીવાખાનની દુકાને તથા શેઠ છેસુઈ અલી બિન કરીમજીની દુકાને વેચાથી મળશે. તથા પાયધોણી નાકે બંગાખાનાની સામે શ્રીપોરબંદરના કાજી ફતેમાહમ્મદ બિન કાજી નૂરમાહમ્મદ સાહેબની દુકાને વેચાથી મળશે.